ओ३म्

पवमान

(मासिक)

मूल्य: ₹ 15

वर्ष : 28 पौष-माघ वि0स0 2072 जनवरी 2016 अंक : 1

मुद्रक: सरस्वती प्रेस, देहरादून वजन: 50 ग्राम

वैदिक साधन आश्रम तपोवन

नालापानी, देहरादून

सामवेद अथर्ववेद

पवमान पत्रिका हमारी वेबसाइट www.vaidicsadhanashramdehradun.com पर भी उपलब्ध है।

स्मृति

स्व. श्री देव दत्त बाली जी

(7 मार्च 1924 – 21 जनवरी 2009)

आद्य सम्पादक

पवमान मासिक पत्रिका

ओ3म्

पवमान

वर्ष–28 अंक–1

पौष–माघ 2072 विक्रमी जनवरी 2016

सृष्टि संवत् 1,96,08,53,116 दयानन्दाब्द : 192

★

–: संरक्षक :–

स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती

★

–: अध्यक्ष :–

श्री दर्शनकुमार अग्निहोत्री

मो. : 09810033799

★

–: सचिव :–

प्रेम प्रकाश शर्मा

मो. : 9412051586

★

–: आद्य सम्पादक :–

स्व0 श्री देवदत्त बाली

★

–: मुख्य सम्पादक :–

कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री

अवैतनिक

मो. : 08755696028

★

–: सम्पादक मण्डल :–

अवैतनिक

आचार्य आशीष दर्शनाचार्य

मनमोहन कुमार आर्य

★

–: कार्यालय :–

वैदिक साधन आश्रम, तपोवन,

तपोवन मार्ग, देहरादून–248008

दूरभाष : 0135–2787001

Email : vaidicsadanashram88@gmail.com

Web-www.vaidicsadhanashramdehradun.com

विषयानुक्रम

सम्पादकीय	कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री	2
वेदामृत	स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती	3
महर्षि दयानन्द द्वारा उद्घोषित राजधर्म	कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री	4
'हमारा गणतन्त्र और समाज'	मनमोहन कुमार आर्य	7
युवाओं विद्यार्थी जीवन....		10
'स्वामी श्रद्धानन्द ने शुद्धि आन्दोलन...	मनमोहन कुमार आर्य	11
वैदिक धर्म	ज्ञानेश्वरार्य	14
आर्य समाज क्या है	पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय	16
आर्य समाज के ज्वलन्त प्रश्न	चमनलाल रामपाल	22
ब्रह्माण्ड और पिण्ड में गायत्री	महात्मा प्रभु आश्रित जी महाराज	26
गाजर का औषधीय प्रयोग		28
एग्जिमा की अनूभूत रामबाण दवाएं	तिलकचन्द कन्दोई	29

वैदिक साधन आश्रम तपोवन, देहरादून के बैंक खातों का विवरण

दान हेतु बैंक खाते का नाम	बैंक का नाम व पता	बैंक अकाउन्ट नं.	IFSC Code
आश्रम को दान देने के लिये			
1. "वैदिक साधन आश्रम"	कैनरा बैंक, क्लाक टावर ब्रांच देहरादून	2162101001530	CNRB0002162
पवमान पत्रिका शुल्क			
2. "पवमान"	कैनरा बैंक, क्लाक टावर ब्रांच देहरादून	2162101021169	CNRB0002162
सत्संग भवन एवं आरोग्य धाम के निर्माण में सहयोग हेतु			
3. "वैदिक साधन आश्रम"	ओरियन्टल बैंक ऑफ कामर्स 17 राजपुर रोड, देहराादून	00022010029560	ORBC0100002
तपोवन विद्यानिकेतन स्कूल के लिये			
4. 'तपोवन विद्या निकेतन"	यूनियन बैंक, तपोवन रोड, नालापानी, देहरादून	602402010003171	UBIN0560243

पवमान पत्रिका में विज्ञापन के रेट्स

1. कलर्ड फुल पेज — रु. 5000/– प्रति माह
2. ब्लैक एण्ड व्हाइट फुल पेज — रु. 2000/– प्रति माह
3. ब्लैक एण्ड व्हाइट हॉफ पेज — रु. 1000/– प्रति माह

पवमान में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र देहरादून ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

सम्पादकीय

सहिष्णुता

सहिष्णुता का अर्थ है– सहनशीलता या क्षमाशीलता। निंदा, अपमान और हानि में अपराध करने वाले को दंड देने का भाव न रखना और अन्य लोगों के धार्मिक कर्मकाण्ड, खानपान और रीति–रिवाजों को सम्मान देते हुए उनसे प्रेम पूर्वक व्यवहार करना सहिष्णुता है। संसार में जितने भी महापुरुष हुए हैं, सहिष्णुता उनका विशेष गुण रहा है। मनुस्मृति में धर्म के दस लक्षण बताए गए हैं जिनमें क्षमा का मुख्य स्थान है। आपस्तम्ब स्मृति के अनुसार क्षमा प्राणियों का उत्तम गुण है। किसी व्यक्ति द्वारा किए गए दुर्व्यवहार, शारीरिक कष्ट या आर्थिक हानि किए जाने से मन में क्रोध उत्पन्न होता है, जो शब्दों में प्रकट कर दिया जाता है या प्रतिक्रिया स्वरूप मानसिक या शारीरिक कष्ट दिया जाता है। सज्जन व्यक्ति अपने विरुद्ध किए गए अपराध को भूल जाते हैं तथा क्षमा प्रदान कर देते हैं। परस्पर एक दूसरे के अपराध को क्षमा करने की उदारता, हम में होनी चाहिए। किसी भी व्यक्ति के प्रति जाने–अनजाने में हुए दुर्व्यवहार के लिए क्षमा मांगने से एक–दूसरे के प्रति मनोमालिन्य सदा के लिए समाप्त हो जाता है।

महाभारत के अनुसार क्षमारूपी गुण सब को वश में कर लेता है। क्षमारूपी तलवार जिसके हाथ में है, उसका दुर्जन क्या बिगाड़ेगा? महाभारत में ही अन्यत्र यह भी कहा गया है कि क्षमा को दोष नहीं मानना चाहिए, यह निश्चय ही परम बल है। क्षमा निर्बल मनुष्यों का गुण है और बलवानों का आभूषण है। जैसे तृणरहित स्थान में जलती हुई अग्नि अपने आप शांत हो जाती है, उसी प्रकार क्षमावान् व्यक्ति के साथ बैर रखने वाले का बैर भी कुछ हानि नहीं पहुंचा सकता है। सहिष्णुओं को लोग निर्बल मान लेते हैं और क्षमाशीलता के गुण को भीरुता मानते हुए अवगुण समझने लगते हैं परन्तु यह परम बल है क्योंकि केवल शक्तिशाली व्यक्ति ही क्षमा कर सकता है। ऋग्वेद के अन्तिम मंत्र का भावार्थ यह है कि विश्व के समस्त निवासियों के संकल्प समान हों। उनके मन व भावनाएं समान हों। यदि उनके विचारों और भावनाओं में समानता होगी तो सहिष्णुता स्वाभाविक रूप से प्राप्त हो सकती है। सहिष्णुता से ही हम राष्ट्र और विश्व में प्रेम और बन्धुत्व का प्रसार कर सकते हैं। स्वतंत्रता की प्राप्ति और रक्षा के लिए धर्म का सही रूप जानते हुए तदनुसार कर्म करना आवश्यक है। धर्म जहां मनुष्य का स्वाभाविक गुण है, वहीं साम्प्रदायिकता विभिन्न पूजा पद्धतियों और कर्मकाण्ड को अपनाना है। यदि हम अन्य लोगों के कर्मकाण्डों और पूजा पद्धतियों का सम्मान करते हुए वेदोक्त मानव धर्म का पालन करते हैं तो समाज में सहिष्णुता का प्रचार व प्रसार होना स्वाभाविक है। यह हमारे देश के निवासियों की सहिष्णुता है कि इस देश में विभिन्न संस्कृतियों और नस्लों के लोग आक्रांता के रूप में या जीवनयापन के उद्देश्य से आये और यहां की संस्कृति में समाहित होकर रहने लगे हैं। आज हम पृथक् रूप से इनकी पहचान भी करना चाहें तो नहीं कर सकते हैं। सहिष्णुता हमारी संस्कृति के रोम–रोम में बसती है। विभिन्नता में एकता ही हमारे गणतंत्र की विशेषता है। सढ़सठवें गणतंत्र दिवस पर सुधि पाठकों को हमारी बधाई।

कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री

❀ वेदामृत ❀

स्वार्थ त्याग कर पवित्रान्तःकरण से नित्य आपकी वन्दना करें

उप त्वाग्ने दिवेदिवे दोषावस्तर्धिया वयम्। नमो भरन्त एमसि।।

ऋक् 1। 1। 7; साम० पृ० 1। 1। 4।।

ऋषिः मधुच्छन्दाः।। देवता— अग्निः।। छन्दः— गायत्री।।

विनय— जब से हम उत्पन्न हुए हैं, दिन के पश्चात् रात और रात के पश्चात् दिल आता—जाता है। प्रतिदिन एक नया—नया दिन और एक नयी—नयी रात आती—जाती है। इस प्रकार यह अनवरत, अविश्रान्त काल—चक्र चल रहा है। इस काल—चक्र में हम कहाँ जा रहे हैं? हे मेरे प्रभो! अग्निदेव! तुमने तो ये अहोरात्र इसलिए रचे हैं कि प्रत्येक अहोरात्र के साथ अपनी आत्मिक उन्नति का दायाँ और बायाँ पैर आगे बढ़ाते हुए हम प्रतिदिन तुम्हारे निकट पहुँचते जाएँ। यदि हम प्रत्येक अहोरात्र के आरम्भ में, अर्थात् प्रातःकाल और सायंकाल के समय में अपनी बुद्धि द्वारा तुम्हारे आगे झुकाते हुए, नमन करते हुए तथा कर्म द्वारा भी अपने "नमः" की भेंट तुम्हारे प्रति लाते हुए, तुम्हारे लिए स्वार्थ त्याग करते हुए चलेंगे तो यह दिन—रात का चक्र हमें एक दिन तुम्हारे चरणों में पहुँचा देगा। इसलिए, हे अग्निरूप परमदेव! हम आज से निश्चय करते हैं कि हम प्रत्येक अहोरात्र को (प्रातःकाल और सायंकाल) अपनी बुद्धि तथा कर्म द्वारा तुम्हें नमस्कार की भेंट चढ़ाते हुए (आत्म—समर्पण व स्वार्थ—त्याग करते हुए) ही अब जीएँगे और इस तरह जहाँ प्रत्येक दिन के श्रममय काल में हमारा दायाँ पैर तुम्हारी ओर बढ़ेगा वहाँ प्रत्येक रात्रिकाल में हमारी उन्नति का बायाँ पैर उस उन्नति को स्थिर करता जाएगा। हे प्रभो! ये दिन—रात इसीलिए प्रतिदिन आते हैं। निश्चय ही आज से प्रत्येक अहोरात्र हमें तुम्हारे समीप लाता जाएगा। आज से प्रतिदिन हम स्वार्थ—त्याग द्वारा पवित्रान्तःकरण होते हुए और पवित्रान्तःकरण से प्रातः—सायं तुम्हारी वन्दना करते हुए प्रतिदिन तुम्हारी ओर आने लगे हैं, हे प्रभो! प्रतिदिन तुम्हारे समीप आते जा रहे हैं।

शब्दार्थ— अग्ने— हे अग्ने! **वयम्**—हम **दिवे दिवे**—प्रतिदिन **दोषावस्तः** — रात और दिन के समय **धिया**—बुद्धि व कर्म से **नमः भरन्तः**— नमस्कार की भेंट लाते हुए **त्वा**— तेरे **उप**— समीप **एमसि**— आ रहे हैं।

महर्षि दयानन्द द्वारा उद्घोषित राजधर्म

–कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने 10 अपैल 1875 को आर्य समाज की स्थापना की। उनकी यह एक बड़ी देन है कि भूले हुए वेदों से उन्होंने फिर से हमें परिचित कराया और वेदों के ज्ञान को समस्त विद्याओं का मूल बताया । उन्होंने न केवल वेदों का भाष्य किया अपितु सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्य–भूमिका, आर्याभिविनय, संस्कारविधि आदि अनेक ग्रन्थ लिखे। महर्षि के हृदय में मातृभूमि का सर्वोपरि स्थान था और देश प्रेम की भावना उनमें कूटकूट कर भरी हुई थी। उन्होंने स्वदेश, स्वसाहित्य, स्वभाषा, स्वसंस्कृति और स्वधर्म के महत्व पर अत्यन्त बल दिया। उनके द्वारा धर्म की परिभाषा करते हुए कहा गया है कि ईश्वर की आज्ञा का पालन करते हुए पक्षपात रहित न्याय और सबका हित करना धर्म है। यह धर्म प्रत्यक्ष आदि प्रमाणों से सिद्ध किए जाने योग्य और वेदोक्त होने से सब मनुष्यों के मानने योग्य हैं। अथर्ववेद के बारहवें काण्ड में धर्म की विस्तृत व्याख्या करते हुए इसका अर्थ सत्य, न्याय, सहिष्णुता ,परोपकार, संयम, तप और दया आदि किया गया है। साथ ही इन्हें धर्म के सार्वभौम सिद्धान्त भी बताया गया है। वेद में मनुष्यों के लिए विधि अर्थात् करने योग्य और निषेध अर्थात् न करने योग्य बातों का वर्णन, ईश्वर प्राप्ति के लिए स्तुति, प्रार्थना, उपासना और मनुष्य के कल्याण के लिए आवश्यक ज्ञान बीज रूप में दिया गया है, इसलिए इसके पालन में किसी को भी कोई शंका या कठिनाई नहीं होनी चाहिए। आज विभिन्न संप्रदायों में जो ईश्वर प्राप्ति हेतु विभिन्न पूजा पद्धतियां हैं, को ही हम धर्म समझ लेते हैं या ऐसा कहें कि धर्म ही संप्रदाय के लिए प्रयोग में आने के कारण संप्रदायों के लिए भी रूढ़ हो गया है। महर्षि ने सत्यार्थप्रकाश के छठे सम्मुलास में राजधर्म का प्रतिपादन किया है। वैदिक अवधारणा के अनुसार समस्त मानव–समाज व सम्पूर्ण राष्ट्र पुरुषरूप है। राष्ट्र के सब मानवों का सम्मिलित रूप एक ही पुरुष है। ये सब 'राष्ट्र पुरुष शरीर' के विभिन्न अंग हैं। ये सब मिलकर ही राष्ट्र कहलाते हैं। राष्ट्र के अवयवरूप किसी भी वर्ग को कष्ट हो तो सारे राष्ट्र के लोगों को दुःखी होना चाहिए और उसकी सहायता के लिए खड़ा होना चाहिए। जैसे शरीर के अनेक अवयव अलग–अलग होने पर भी समस्त शरीर की मिलकर एक संवेदना होती है, एकात्मता होती है, वैसे ही राष्ट्र में एकात्मता होनी चाहिए। इस आधार पर वेद की राष्ट्रीय शासन–व्यवस्था टिकी हुई है। ऋग्वेद के पुरुष–सूक्त में–ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र सभी को विराट्–पुरुष के विभिन्न अंगों के रूप में चित्रित किया गया है। इसमें एकात्मता का सुन्दर निरूपण है। परन्तु यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि सायण, उब्बट आदि पौराणिक भाष्यकारों द्वारा मन्त्र की गलत व्याख्या कर दिये जाने के कारण इस मन्त्र ने समाज में लाभ के स्थान पर हानि अधिक की है। राष्ट्र को महर्षि का ऋणी रहना चाहिए जिन्होंने मन्त्र का सही अर्थ स्पष्ट करके विराट् पुरुष की कल्पना को साकार रूप दिया है।

यजुर्वेद के एक मंत्र की व्याख्या करते हुए महर्षि कहते हैं कि राष्ट्रधर्म या राजधर्म उसे कहते हैं जिसमें राजन् सभाध्यक्ष सब प्रकार की शिक्षा प्राप्त कर विद्वानों को अपने साथ शासन के लिए सम्मिलित करते हुए, सेना की उचित रूप से सहायता लेते हुए और उनकी रक्षा करते हुए प्रजा का पालन करे। वर्तमान समय में एक कल्याणकारी राज्य में राष्ट्रपति या प्रधानमंत्री से भी यही कार्य करने की अपेक्षाएं की जाती हैं। महर्षि ने विभिन्न वेद मंत्रों की व्याख्या करते हुए और अपने ग्रन्थों, सत्यार्थप्रकाश आदि में कहा है कि सब राज्याधिकार, सेनापतियों और सेना के बीच राज्याधिकार, दण्ड देने की व्यवस्था सम्बंधी कार्यों का दायित्व आदि इन समस्त कार्यों का आधिपत्य वेदशास्त्रों में प्रवीण, पूर्ण विद्या वाले, धर्मात्मा, और जितेन्द्रिय होने चाहिए अर्थात् मुख्य सेनापति, मुख्य राज्याधिकारी, मुख्य न्यायाधीश, प्रधान और राजा ये सब विद्याओं में पूर्ण विद्वान् होने चाहिये। राजा और सभासदों को इन्द्रियों पर विजय प्राप्त करने वाला, अधर्म न करने वाला और योगाभ्यासी होना चाहिए। राजा को निरंकुश, तानाशाह, और वंशानुगत नहीं होना चाहिए। वह प्रजा द्वारा चुना हुआ शासक ही होना चाहिए। अथर्ववेद में प्रजा के द्वारा राजा का चुनाव किया जाय , ऐसा उल्लेख अनेक बार किया गया है। अथर्व0 के मन्त्र सं.(3/4/2) में कहा गया है–''त्वां दिशां वृणता राज्याय'' अर्थात् ''हे राजन सारी प्रजायें राज्य करने के लिए तुम्हें चुने''। राजा और प्रजा के सम्बन्ध मधुर होने चाहिए। यजुर्वेद के एक मन्त्र (30/2) का भाष्य करते हुए महर्षि कहते हैं कि जैसे परमेश्वर जीवों को अशुभ आचरण से अलग कर शुभ आचरण में प्रवृत्त करता है, वैसे राजा भी करे। जैसे परमेश्वर में पितृभाव करते अर्थात् उस को पिता मानते हैं, वैसे राजा को भी मानें। जैसे परमेश्वर जीवों में पुत्र भाव का आचरण करता है, वैसे राजा भी प्रजाओं में पुत्रवत् वर्ते। जैसे परमेश्वर सब दोष, क्लेश और अन्यायों से निवृत्त है, वैसे राजा भी होवे। महर्षि यजुर्वेद के मन्त्र (20/50) की व्याख्या करते हुए कहते हैं कि परमात्मा को राजा मानने वाला कभी पराजित नहीं होता वह सदा अपराजेय रहता है। यजुर्वेद के ही विभिन्न मन्त्रों के आधार पर महर्षि ने राजा के गुणों का वर्णन किया है। उनके अनुसार राजा को अपना मस्तिष्क शुभ कर्मों में प्रेरित करना चाहिए। उसे धर्म के आचरण से पवित्र होना चाहिए और कार्यों को शीघ्र निष्पादित करने वाला होना चाहिए। वह आलसी न हो। राजा को अग्नि के समान दुष्टों को भस्म करना चाहिए, चन्द्र के तुल्य श्रेष्ठों को सुख देना चाहिए। उसे न्यायकारी, शुभलक्षणयुक्त होना चाहिए। राजा अपराध के अनुकूल प्रजा को दण्ड देवे किन्तु निरपराधी को बिना किसी कारण के पीड़ा न देवे। महर्षि वेद के मन्त्रों की व्याख्या करते हुए कहते हैं कि राजा और प्रजा के सम्बन्ध रूपी व्यवहार में तीन सभायें अर्थात् विद्यार्यसभा, धर्मार्य सभा और राजार्यसभा नियत कर के समस्त प्रजा को स्वातंत्र्य, धर्म, सुशिक्षा और धनादि से अलंकृत करना चाहिए। एक व्यक्ति को राज्य का स्वतन्त्र अधिकार नहीं देना चाहिए अर्थात् राजा निरंकुश नहीं होना चाहिए उसे सभापति के अधीन होना चाहिए। सभापति के अधीन सभा, राजा और सभा प्रजा के अधीन, ये सभी प्रजा के अधीन और प्रजा राजसभा के अधीन रहे। हमारे संविधान के अन्तर्ग वर्तमान संसदीय प्रणाली और प्रजा तन्त्र के चार स्तम्भों– कार्यपालिका, संसद, न्यायपालिका और प्रेस

की व्यवस्था में राष्ट्रपति, प्रधान मन्त्री, सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश और मीडिया का स्वतन्त्र होते हुए भी एक–दूसरे पर नियंत्रण रहता है जिससे कोई भी संस्था निरंकुश रूप से शासन नहीं कर सकती है। वेद में तीन प्रकार के राज्य बताए गये हैं, छोटे–छोटे मांडलिक राज्य जिसके प्रधान के लिए राजा और उसके पर्याय नृपति आदि शब्दों का प्रयोग किया गया है, इनके ऊपर बड़े राज्य बताये गये हैं। इन सबसे ऊपर चक्रवर्ती राज्य का वर्णन महर्षि द्वारा अपने ग्रन्थों में अनेक स्थानों पर किया गया है। ऐसा राजा होने पर राष्ट्रों के आपस के झगड़ें मिट सकते हैं। अथर्ववेद के सातवें काण्ड के बारहवें सूक्त में राज्य की सीमा का वर्णन किया गया है। राज सभा के दो सदन होने चाहिए– एक सदन का नाम **''सभा''** और दूसरे सदन का नाम **''समिति''** कहा गया है। अथर्ववेद में इन सदनों के सदस्यों को **''पितर''** कहा गया है। पितर शब्द से इन सदस्यों का समाज में उच्च स्थान माना जाना प्रतीत होता है। ब्रिटेन जैसे देशों में इसे हाउस ऑफ लॉर्ड्स और भारत में राज्य सभा (अपर हाउस) कहा जाता है। वेदों में प्रतिपादित नियमों के अनुसार स्त्रियां भी इन सदनों की सदस्य चुनी जा सकती हैं। वे सम्राट और न्यायाधीश भी चुनी जा सकती थीं। आज जब हम स्त्री स्वातंत्र्य की बात करते हैं तो यह पाते हैं कि अभी हाल के कुछ वर्ष पूर्व तक यूरोप के कई देशों और अमेरिका में उन्हें मत देने का अधिकार भी प्राप्त नहीं था। वेदों में वर्णित राज्य व्यवस्था में कर की व्यवस्था किस प्रकार की जाय, कृषि आदि में राज्य किस प्रकार से सहायता करे, राज्य की सड़कों का निर्माण किस प्रकार किया जाय, गौओं आदि विभिन्न पशुओं के पालने में राज्य किस प्रकार सहायक हो तथा कर किस प्रकार से लगाया जाय आदि विभिन्न विषयों का विस्तार से उल्लेख किया गया है जो वर्तमान राज्य व्यवस्था से हर प्रकार से उत्तम कहा जा सकता है। देश की रक्षा के लिए शक्तिशाली सेना रखने की बात कही गई है। यह भी स्पष्ट रूप से कहा गया है कि सत्य, न्याय, परोपकार, सहिष्णुता, तप और संयम आदि धर्म के सार्वभौम सिद्धान्त हैं। वेदों में न्याय व्यवस्था के बारे में भी विस्तृत वर्णन मिलता है।'' सभा, राजा, और राजपुरुषादि नये नियमों का निर्माण कर के उनके द्वारा ही न्याय करें। जो नियम शास्त्रोक्त न पावें और उनके होने की आवश्यकता जानें तो उत्तमोत्तम नियम बांधे कि जिससे राजा और प्रजा की उन्नति हो। न्यायव्यवस्था में दण्ड के प्रकारों का वर्णन किया गया है कि प्रथम दण्ड वाणी का दण्ड अर्थात् **'निन्दा'** दूसरा **'धिक'** अर्थात् तुम को धिक्कार है, तूने ऐसा बुरा काम क्यों किया? तीसरा उससे **'धन लेना'** और चौथा **'वध'** दण्ड अर्थात् उसको कोड़ा व बेंत मारना या उसका सिर काट देना। वैदिक दण्ड व्यवस्था में दुष्टाचारियों को दग्ध करने का भी निर्देश दिया गया है। स्वतन्त्रता प्राप्त होने के बाद महर्षि द्वारा वेदों की ज्ञान गंगा से निकाले गये इन मोतियों के आधार पर भारत को कल्याणकारी राज्य बनाने के लिए बहुत प्रयास किये जा चुके हैं और अभी बहुत कुछ किया जाना बाकी है। महर्षि ने देश और समाज पर अनेक उपकार किये हैं। हम उन्हें शत–शत नमन करते हैं।

सौजन्य से– **APEX ENGINEERS**
Gurgaon (Haryana), Mob. : 09810481720

ओ३म्

गणतन्त्र दिवस के अवसर पर

'हमारा गणतन्त्र और समाज'

—मनमोहन कुमार आर्य

हम सब भारत के नागरिक हैं। हमारा देश 15 अगस्त, 1947 को विगत सैकड़ों वर्षों की दासता के बाद स्वतन्त्र हुआ था। विदेशी दासता से मुक्ति से एक दिन पहले देश के एक तिहाई भाग से अधिक भाग को भारत से अलग कर दिया गया। जिन कारणों से भारत का विभाजन हुआ, उसके बाद भी प्रायः वैसी ही अनेक धार्मिक व सामाजिक समस्यायें आज भी विद्यमान हैं। आजादी से पहले हम अंग्रेजों के गुलाम थे और इससे पूर्व हमें मुसलमानों की दासता और भीषण अत्याचार सहन करने पड़े थे। वैदिक व हिन्दू धर्म के धार्मिक अन्धविश्वासों व तदनुरूप सामाजिक व्यवस्था के कारण मुख्यतः यह पराधीनता व दुःख आये थे। मुसलमानों के देश के बड़े भूभाग पर आधिपत्य से पूर्व भारत में भारतीय आर्य–हिन्दू राजा राज्य करते थे। चाणक्य व विक्रमादित्य के काल में भारत संगठित था और इसकी सीमायें वर्तमान से भी अधिक दूरी तक फैलीं हुईं थीं। किसी समय में अफगानिस्तान, श्रीलंका, नेपाल व बर्मा या म्यमार आदि भी भारत के ही अंग हुआ करते थे। इन सब देशों में एक ही वैदिक धर्म और वैदिक संस्कृति हुआ करती थी। धार्मिक अन्धविश्वास, सामाजिक विषमता व विदेशी दासता का मुख्य कारण महाभारत का महायुद्ध और उसके प्रभाव से देश में अव्यवस्था का उत्पन्न होना था। महाभारत के युद्ध में बहुत से लोग मारे गये थे तथा जो बचे थे उन्हें आलस्यजनित अकर्मण्यता ने अपने नियंत्रण में ले लिया था। महाभारत काल तक व उसके बाद चाणक्य व विक्रमादित्य के काल तक सुदूर पूर्व का भारत वैदिक धर्म और संस्कृति की छत्रछाया में उन्नत व विकसित था। वैदिक धर्म का प्रादुर्भाव सृष्टि के आरम्भ काल, 1 अरब 96 करोड़ 8 लाख 53 हजार 115 वर्ष पूर्व हुआ था। तब से पांच हजार वर्ष पूर्व हुए महाभारत युद्ध तक विश्व में एक ही धर्म व एक ही संस्कृति थी जिसका आधार वेद, वैदिक ग्रन्थों सहित हमारे पारदृष्टा ऋषि–मुनियों के वचन व मान्यतायें होती थी।

देश की आजादी में प्रमुख योगदान महर्षि दयानन्द, उनके द्वारा स्थापित आर्यसमाज और इनके द्वारा किये गये धार्मिक और समाज सुधार के कार्यों को सर्वाधिक है। स्वामी दयानन्द सरस्वती ही आजादी के प्रणेता थे। सन् 1874 में सत्यार्थ प्रकाश की रचना हुई। इसका संशोधित संस्करण सन् 1883 में तैयार हुआ। इस ग्रन्थ के आठवे समुल्लास में महर्षि दयानन्द ने लिखा है कि कोई कितना ही करे किन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है। अथवा मत–मतान्तर रहित, प्रजा पर माता, पिता के समान कृपा न्याय और दया के साथ भी विदेशियों का राज्य पूर्ण सुखदायक नहीं होता। सम्पूर्ण भारत के साहित्य में स्वराज्य का सर्वोपरि उत्तम होना सबसे पहले सत्यार्थप्रकाश ने ही देशवासियों को बताया। महर्षि दयानन्द के आर्याभिविनय व संस्कृत वाक्य प्रबोध आदि ग्रन्थों के कुछ अन्य वाक्य भी इसी प्रकार से आजादी के आन्दोलन का मुख्य आधार कहे जा सकते हैं। स्वराज्य सर्वोपरि उत्तम होने का अर्थ है परराज्य या विदेशी राज्य निकृष्ट व बुरा होता है और इसका अनुभव अंग्रेजी राज्य और उससे पूर्व मुस्लिम राज्य में भारत के लोगों ने किया वा भोगा है जो कि इतिहास के पन्नों पर अंकित है। महर्षि दयानन्द जी की एक अन्य बहुत बड़ी

देन है कि उन्होंने मत–मतान्तरों किंवा धर्मों का तुलनात्मक अध्ययन किया और वेद व वैदिक धर्म को सत्य की कसौटी पर सिद्ध पाया। उन्होंने इसी कारण वेदों का प्रचार किया और अन्य सभी मतों में विद्यमान असत्य व अविद्याजन्य विचार, मान्यताओं, सिद्धान्तों, आस्थाओं, कर्मकाण्डों, कुरीतियों आदि का दिग्दर्शन कराया और मनुष्य जाति की उन्नति के लिए उनका खण्डन किया। इससे यह सिद्ध हुआ कि विश्व में सुख व शान्ति धर्म व समाज संबंधी सत्य मान्यताओं व सिद्धान्तों के द्वारा और इसके पर्याय वैदिक धर्म की स्थापना से ही लाई जा सकती है। ऐसा होने पर ही सभी मनुष्यों में एक भाव व परस्पर एक सुख–दुःख की उत्पत्ति अर्थात् समाजिक समरसता होनी सम्भव है।

महर्षि दयानन्द के ग्रन्थों व विचारों ने स्वतन्त्रता की भावना को उद्‌बुध व प्रदीप्त किया। देश में स्वतन्त्रता के लिए आन्दोलन चला। कुछ देशवासियों का विचार था कि आजादी अंहिसक आन्दोलन से मिल सकती है और कुछ विद्वानों व चिन्तकों का विचार था कि क्रान्तिकारी कार्यों को अंजाम देकर ही विदेशी हुकमरानों को देश को स्वतन्त्र करने के लिए बाध्य किया जा सकता है। दोनों ही आन्दोलन देश में चले। दोनों का अपना महत्व है। क्रान्तिकारियों को अधिक कुर्बानियां देनी पड़ी व असह्य कष्ट उठाने पड़े। क्रान्तिकारियों के कार्यों से अंग्रेज शासक अधिक विचलित, भयभीत व परेशान होते थे और उन्हें दण्ड के रूप में कठोर यातनायें व मृत्यु दण्ड आदि बहुत कड़े दण्ड देते थे। हमें लगता है कि केवल अहिंसात्मक आन्दोलन से ही अंग्रेजों को देश छोड़ने के लिए विवश नहीं किया जा सका था। अतः क्रान्तिकारी आन्दोलन का अपना विशेष महत्व और योगदान है और इस आन्दोलन के सभी नेता व अनुयायी देशवासियों के पूज्य व आदर्श हैं। इन आन्दोलनों व अंग्रेजों की अपनी परिस्थितियों के कारण देश 15 अगस्त, 1947 को स्वतन्त्र हुआ। एक दिन पूर्व देश का विभाजन इस आधार पर किया गया कि हिन्दू और मुसलमान दो अलग कौमें हैं और यह साथ मिलकर नहीं रह सकतीं। देश का विभाजन देशभक्तों के लिए दुःखद स्थिति थी। कुछ वरिष्ठ क्रान्तिकारी तो इस सदमे को सहन न कर सके और इस दुःख से पीड़ित होकर कुछ समय बाद उनकी मृत्यु हो गई।

देश को चलाने के लिए संविधान की आवश्यकता थी। अतः एक संविधान सभा का निर्माण किया गया। भारत के प्रथम कानून मंत्री डा. भीमराव रामजी अम्बेदकर संविधान आलेखन (drafting) सभा के सभापति बनाये गये। संसार के प्रमुख देशों के संविधानों का अध्ययन कर भारत का संविधान बनाया गया जिसे 26 जनवरी, 1950 से लागू किया गया। भारत के संविधान की अनेक विशेषतायें हैं। लोगों को समान अधिकारी दिए गये हैं तथा देशवासियों को किसी भी मत व धर्म को मानने की स्वतन्त्रता दी गई है। इसी के साथ नेताओं द्वारा कश्मीर को विशेष राज्य का दर्जा, कुछ मत व वर्गों को विशेष दर्जा या अधिकार व कुछ के लिए अपना कानून आदि का अधिकार दिया गया जो कि विचारणीय है। जैसा भारत में है, ऐसा शायद विश्व के अन्य किसी देश में नहीं होगा। हमारे देश में अनेक पूर्वाग्रहों से युक्त बुद्धिजीवी हैं। यह अपने–अपने प्रकार से विचार करते हैं। कुछ जो कह देते हैं, उनकी बात सुनी जाती है, कुछ की अनसुनी या सही बातों को भी दबा दिया जाता है। यह सब कुछ प्रायः सत्तारूढ़ दल के मुख्य नेताओं पर निर्भर करता है। हम सब नागरिकों के लिए एक समान रूप से स्वतन्त्रता की बात करते हैं परन्तु कई बार यह बहुत से मामलों में दिखाई नहीं देती। आज देश में एक धनिक और एक निर्धन वर्ग पैदा हो गया। निर्धन वर्ग भी ऐसा कि जिसके पास दो समय का भोजन, अपनी छत व अच्छे वस्त्र व शिक्षा के लिए आवश्यक न्यूनतम

धन भी नहीं है और वहीं कुछ लोगों के पास इतना अधिक धन है कि वह उसका दुरुपयोग व कर चोरी करते हुए दृष्टिगोचर होते हैं। कहा जाता है कि संविधान ने सबको समान अधिकार दिये हैं परन्तु समाज में यह देखने को कम ही मिलता है। शिक्षा व चिकित्सा निःशुल्क होनी चाहिये परन्तु यह आज करोड़ो लोगों की क्षमता से बहुत दूर है। सुरक्षा भी ईश्वर के भरोसे है। कई बार बड़े–बड़े हादसे हो जाते हैं, जनता विरोध करती है, कुछ कानूनों में परिवर्तन किया जाता है परन्तु अपराधों में रोक नहीं लगती। समस्याओं के हल करने में भी राजनीतिक दलों की वोट बैंक की नीति आड़े आती है। देश की आजादी को स्वतन्त्रता दिवस से 67 वर्ष से अधिक और गणतन्त्र बनने से 63 वर्ष बीत चुके हैं परन्तु आज का समाज अनेक असमान मान्यताओं वाले मत–मतान्तरों, अन्धविश्वासों, पाखण्डों, अशिक्षा, अज्ञान, शोषण, अन्याय, असुविधाओं, अपराधों, निर्धनता, असमानता व अनेक दुःखों से युक्त है। सभी देशवासी एक विचार, एक भाव, एक सुख दुःख, एक हानि–लाभ, परस्पर भाई बहिन के समान व्यवहार आदि गुणों से युक्त नहीं हो सके और शायद कभी हो भी नहीं सकेंगे।

हमें यह भी लगता है कि परिस्थितियोंवश हमारे संविधान का निर्माण करते समय वेदों, दर्शनों, मनुस्मृति व नीति ग्रन्थों का अध्ययन कर उनकी अच्छी बातों को संविधान में सम्मिलित नहीं किया गया, यदि किया जाता तो अच्छा होता। अच्छे विचार व बातें तो कहीं से भी मिलें, ग्रहण की जानी चाहिये। वेदों और दर्शनों का सिद्धान्त है कि जिससे यह संसार बना और चल रहा है, वह एक सत्ता ईश्वर है जो निराकार, सूक्ष्मातिसूक्ष्म, चेतन–तत्व, सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान है। इस शत प्रतिशत सही बात को भी न तो संविधान में स्थान प्राप्त हुआ और न ही देशवासी इसके अनुसार व्यवहार करते हुए दिखाई देते हैं। वैदिक काल में शिक्षा निःशुल्क, अनिवार्य व एक समान होती थी। सबको समान सुविधायें दिये जाने का विधान था तथा किसी के साथ भेदभाव नहीं किया जाता था। यह उच्च आदर्श व नियम मध्यकाल में भुला देने के कारण ही देश का पतन हुआ और पराधीनता का कारण बना। आज हमारे निर्धन देशवासी शिक्षा के अभाव से ग्रस्त है। ईश्वर ने उन्हें मनुष्य जीवन तो दिया परन्तु अनेक व्यक्ति ऐसे भी हैं जो देश व समाज की व्यवस्था के कारण पशुओं जैसा जीवन जीने के लिए बाध्य हैं। बुन्देलखण्ड में आज भी निर्धन किसान व भूमिहीन साधनों के अभाव में घास की बनी रोटी बिना दाल व सब्जी तथा चावल के खाने के लिए मजबूर हैं। यह कैसा देश है जहां अरबपति व खरब पति लोग रहते हैं और अपने ही देश के बन्धुओं के प्रति उनमें दया, प्रेम, करूणा का भाव नहीं है। इसका अर्थ है कि वह स्वयंभू विचार वाले संवेदनाहीन मनुष्य हैं और अन्य मनुष्यों को अपना परिवार और ईश्वर की सन्तान नहीं मानते। अतः आज आवश्यकता है कि एक स्वस्थ, शिक्षित, शोषण व अन्याय मुक्त, सभी के लिए घर, वस्त्र, भोजन, चिकित्सा, सामाजिक सुरक्षा व सत्य वैदिक ज्ञान से युक्त समाज व देश बनाने की दिशा में हमारे सभी श्रेष्ठ व अन्य बुद्धिजीवी विचार करें और एक आदर्श भारत के निर्माण की रचना व संगठन में अपना योगदान दें।

जनतन्त्र व लोकतन्त्र इसी लिए आदर्श माने जाते हैं कि इसमें वैचाारिक व क्रियात्मक रूप से जनता को शिक्षा, ज्ञान, पक्षपात व अन्याय मुक्त वातावरण मिलता है। सभी को अपनी आजीविका मिलती है जिससे वह अपने जीवन को स्वस्थ व निरोग रखते हुए धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष के मार्ग पर अग्रसर हो सकें। इसे अभ्युदय और निःश्रेयस प्राप्त करने में संलग्न जीवन भी कह सकते हैं। हम जितना भौतिकवादी बनेंगे, जो कि आज बन गये हैं,

उतना ही हम जीवन के लक्ष्यों से दूर होते जायेंगे और हमारा यह मनुष्य जीवन उद्देश्य व लक्ष्य से भटका हुआ जीवन ही कहा व माना जायेगा। हम चाहते हैं कि गणतन्त्र दिवस पर समाज में निर्धनता दूर करने, सबको समान, निःशुल्क, अनिवार्य शिक्षा प्राप्त कराने तथा सबके लिए निःशुल्क चिकित्सा, न्याय व सुरक्षा की गारण्टी युक्त वातावरण के निर्माण का प्रयास होना चाहिये। इन विषयों पर बहस हो, योजनायें बनें और सभी देशवासी इस कार्य में जुट जायें। अमीरी व गरीबी की खाई कम होनी चाहिये। अधिक सम्पत्ति वालों पर अधिक कर लगाकर उसे निर्धन जनता के दुःख व दर्द दूर करने में, बिना भ्रष्टाचार किये, व्यय करना चाहिये। सरकार की ओर से ऐसी योजना बने जिससे वेदों और वैदिक साहित्य पर अनुसंधान व उसके मानव जीवन पर प्रभावों का अध्ययन कर उससे लाभ उठाने के लिए प्रभावशाली प्रयत्न किये जायें। हम आशा करते हैं कि पाठक लेख पर सदभावपूर्ण रीति से विचार करेंगे।

युवाओं विद्यार्थी जीवन के महत्व को समझो

हमारे खाने, पहनने, रहने, पढ़ाने आदि की सारी व्यवस्था हमारे माता–पिता ही करते है, और इन व्यवस्थाओं को करने में उन्हें बहुत परिश्रम करना पड़ता हैं। इतना ही नहीं उन्हें अपनी सुविधाओं को कम भी करना पड़ता है। वे असुविधाओं में जी लेते हैं केवल हमे सुख देने के लिये। हमारे जन्म से लेकर अभी तक माता–पिता ने हमे सुखी रखने के लिये अपने सुख को महत्व ही नही दिया और आज जब हमें कुछ भी कष्ट होता है तो वो व्यथित हो उठते है और रो पड़ते हैं।

यदि हम विद्यार्थी हैं तो जरा विचार करें, जरा सोचें, कि हमें उन्होंने शिक्षा के लिये सारी सुविधायें उपलब्ध करा दी हैं और हम अपनी ऊर्जा को शिक्षा की दिशा में न लगाकर कुछ और ही कर रहे हैं। फ्रेंड्स सोसाइटी के समक्ष शिक्षा को कम महत्व देते हैं। ऐसा करना अपने माता–पिता के साथ धोखा करना है। क्या हम उनके साथ धोखा कर रहे हैं? क्या हमारा यही कर्तव्य है? नहीं! यदि 'शिक्षा' के उद्देश्य से हमारे दोस्त आदि हमें भटका रहे हो या हमारी शिक्षा में बाधा बन रहें हों तो हमे उनका साथ छोड़ देना चाहिये क्योंकि यही हमारे माता–पिता की इच्छा है।

हम किसी के थोड़े से उपकार पर उन्हें बार–बार धन्यवाद कहते हैं। माता पिता हमारे लिये अपना पूरा जीवन लगा देते हैं क्या हमने उनको धन्यवाद कहा?

हमारे लिये जो हमारे माता–पिता सोच सकते हैं, कर सकते हैं, वह अन्य कोई कर ही नहीं सकता। एक अनपढ़ (कम पढ़े) माता पिता भी यह चाहते हैं कि उनकी संतान उनसे भी अधिक पढ़े, ज्ञानी बने। निर्धन माता–पिता चाहते है कि उनकी संतान धनवान हो। निर्बल माता–पिता चाहते हैं कि उनकी संतान बलवान बने। इस प्रकार की इच्छा और उसे पूरा करने के लिये प्रयत्न केवल माता पिता ही कर सकते हैं, अन्य कोई नही कर सकता। मित्र कभी भी नहीं चाहेगा की तुम उससे अधिक अंक से पास हों या उससे अधिक धनवान हो या उससे अधिक बलवान हो। यह सदा ध्यान रखना तुम्हारे परम विकास और चरमोत्कर्ष के लिये केवल तुम्हारे माता पिता ही इच्छुक और प्रयत्नशील रहेंगे। उनके इस अतुलनीय कार्य और आशीर्वाद के लिये उनको धन्यवाद कैसे करोगे?

उपाय–अपने आचरण, अपने व्यवहार को ऐसा रखो कि वे तुमसे संतुष्ट हो और तुम पर विश्वास और गर्व कर सकें। यही माता पिता के लिये सच्ची श्रद्धा और तर्पण हैं। याद रखों माता पिता से बढ़कर दूसरा कोई शुभचिन्तक और मित्र नही हो सकता।

सम्पर्क सूत्र : आचार्य श्री आदित्य योगी जी महाराज गंगोत्री (हिमालय)

ओ३म्

—स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस आयोजन सम्पन्न—

'स्वामी श्रद्धानन्द ने शुद्धि आन्दोलन चलाकर धर्मान्तरित बिछुड़े बन्धुओं को गले लगाया था'

—मनमोहन कुमार आर्य

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस का आयोजन जिला आर्य उप–प्रतिनिधि सभा, देहरादून के तत्वावधान में वैदिक साधन आश्रम, तपोवन, देहरादून के भव्य सभागार में 23 दिसम्बर, 2015 को सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। इस आयोजन में श्री रूहेल सिंह एवं श्री उम्मेद सिंह विशारद के भजन तथा तपोवन विद्या निकेतन, तपोवन, नालापानी तथा द्रोणस्थली कन्या गुरुकुल, देहरादून की छात्राओं के स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन व कार्यों पर भजन व गीत हुए। मुख्य अतिथि श्री उमेश शर्मा, विधायक, उत्तराखण्ड के सम्बोधन सहित श्री आशीष आर्य, डा. अन्नपूर्णा, श्री वेदप्रकाश गुप्ता, श्री चमनलाल रामपाल, इ. प्रेमप्रकाश शर्मा जी आदि के सम्बोधन व तपोवन विद्या निकेतन के छा़त्र–छात्राओं की ओर से स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन पर आधारित एक नाटक का मंचन भी हुआ। कार्यक्रम श्रद्धा व भक्ति के वातावरण में सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

कार्यक्रम के आरम्भ में श्री उम्मेदसिंह विशारद ने एक देशभक्ति का भजन गाया जिसके बाद तपोवन विद्या निकेतन विद्यालय की कक्षा 5 की छात्रा दिया और छात्र वैभव ने मिलकर एक कविता प्रस्तुत की। द्रोण स्थली आर्ष कन्या गुरुकुल की छात्राओं ने इसके बाद एक सामूहिक गीत प्रस्तुत किया। जिसके आरम्भिक शब्द थे 'प्यास कातिल की बुझा कर, गोलियां सीने पे खाकर (स्वामी श्रद्धानन्द) चल दिये। गंगा के निकट जंगल में मंगल कर दिया, कांगड़ी गुरुकुल बनाकर चल दिये।।' इसके पश्चात श्री विशारद और आर्य जगत के प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री रूहेल सिंह जी के भजन हुए। श्री रूहेल सिंह जी द्वारा गाये भजन के बोल थे 'सबसे बड़ा है भगवान, ऐसी महिमा निराली उसकी देख लो। नीले गगन में जुड़े हैं सितारे कैसे, जड़े हैं सितारे....'। इसके बाद द्रोणस्थली कन्या गुरुकुल की छात्राओं द्वारा मुख्य अतिथि श्री उमेश शर्मा के सम्मान में मंगलाचरण प्रस्तुत किया गया और उन्हीं के द्वारा एक स्वागत गीत भी गाया गया।

स्वागत गीत के बाद आचार्य आशीष दर्शनाचार्य का सम्बोधन हुआ। उन्होंने स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन से जुड़े कुछ महत्वपूर्ण प्रश्नों को प्रस्तुत कर तपोवन विद्या निकेतन और द्रोणस्थली कन्या गुरुकुल की छात्राओं से उनका उत्तर मांगा। बच्चों ने उनके सभी प्रश्नों का उत्तर दिया जिसके लिए कुछ बच्चों को पुरस्कृत भी किया गया। आचार्य आशीष जी ने देश की आजादी के आन्दोलन के दौरान स्वामी श्रद्धानन्द जी के नेतृत्व में दिल्ली में रौलेट एक्ट के विरोध में निकाले गये विशाल जुलूस का उल्लेख कर उसमें स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा अंग्रेजों के गुरखा सैनिकों की संगीनों के सामने अपना सीना खोल देने और उन्हें उन पर गोली चलाने के लिए ललकारने कि **'चलाओ गोली'** की घटना को भी प्रभावशाली शब्दों में प्रस्तुत किया। द्रोणस्थली कन्या गुरुकुल की मेधावी व सरस वाणी की धनी छात्रा दीप्ति आर्या ने श्रद्धानन्द जी के जीवन पर अपने विचार प्रस्तुत करते हुए स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा चलाये गये शुद्धि आन्दोलन की चर्चा की और कहा कि

आज भी हिन्दुओं का अन्य मुस्लिम व ईसाई मतों में धर्मान्तरण चल रहा है। उन्होंने कहा कि हमसे दूर हुए बन्धुओं की शुद्धि की आज भी आवश्यकता है।

उन्होंने बताया कि आजादी के आन्दोलन में दिल्ली में रौलेट एक्ट के विरोध में ऐतिहासिक आन्दोलन का नेतृत्व स्वामी श्रद्धानन्द जी ने किया था। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने अपने जीवन में अनेक गुरुकुलों की स्थापना भी की। उन्होंने कहा कि स्वामीजी धर्म व मतों के अविवेकपूर्ण कार्यों से खिन्न होकर युवावस्था में नास्तिक बन गये थे। स्वामी दयानन्द जी के सत्संग, उनके उपदेशों व शंका समाधान से भविष्य में उनकी नास्तिकता दूर हुई और वह सच्चे आर्य बनें।

मुख्य अतिथि श्री उमेश शर्मा जी विधायक महोदय ने अपना सम्बोधन प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि वह सभी उपस्थित बन्धुओं के साथ मिलकर स्वामी श्रद्धानन्द जी को अपनी श्रद्धांजलि देते हैं। उन्होंने कहा कि तपोवन विद्या निकेतन और कन्या गुरुकुल की सभी छात्र–छात्रायें और उनके शिक्षकगण स्वामी श्रद्धानन्द जी के प्रेरणादायक जीवन से शिक्षा ग्रहण कर उनका अनुकरण और अनुसरण करें और इससे अपने व समाज के लोगों के जीवनों में बदलाव पैदा करें। उन्होंने कहा कि स्कूल के बच्चों को ही भविष्य में देश व प्रदेश का भविष्य बनाना है। श्री उमेश शर्मा ने सभी छात्र–छात्राओं और सभागार में उपस्थित लोगों को देश व प्रदेश की उन्नति में अपना योगदान करने का भी आह्वान किया। उन्होंने कहा कि देश के महापुरुषों ने देश और समाज की उन्नति में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। आज के इस आयोजन में विद्यालय और गुरूकुल के जो छात्र व छात्रायें बैठे हैं, वह स्वामी श्रद्धानन्द जैसा बनने का संकल्प करें और देश तथा धर्म की उन्नति में योगदान करें, इसकी आवश्यकता अतिथि महोदय ने बताई। उन्होंने धर्म तथा महापुरुषों के जीवनों से शिक्षा ग्रहण करने का आग्रह किया और सबको अपनी शुभकामनायें दी।

कन्या गुरूकुल की छात्रा दीप्ति आर्या ने कहा कि आज हम स्वामी श्रद्धानन्द जी का 90वां बलिदान दिवस मना रहे हैं। जिनकी एक आततायी अब्दुल रसीद ने गोलियों की बौछार करके 23 दिसम्बर 1926 को हत्या कर दी थी। स्वामी श्रद्धानन्द जी की हत्या उनके द्वारा चलाये गये शुद्धि आन्दोलन के कारण की गई थी। उन्होंने बताया कि स्वामी जी के समय में तबलीग आन्दोलन चल रहा था जिसके अन्तर्गत मुसलमान हिन्दुओं का धर्म परिवर्तन करके उन्हें मुसलमान बनाते थे। ईसाई भी हिन्दुओं का धर्म परिवर्तन करते थे। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने धर्मान्तरण के इस आन्दोलन के विरोध में अपने प्यारे धर्मान्तरित भाईयों की शुद्धि करके उन्हें पुनः हिन्दुत्व में सम्मिलित करने का शुद्धि आन्दोलन चलाया था। दीप्ति आर्या ने कहा कि हमें गर्व है व हम धन्य हैं कि हम आर्य–हिन्दू धर्म में जन्मे हैं। मेधावी छात्रा ने स्वामीजी की आत्मकथा **'कल्याण मार्ग का पथिक'** का उल्लेख कर उसकी प्रेरणादायक भूमिका को पूरा का पूरा उद्धृत किया। रौलेट एक्ट के विरोध मे आन्दोलन व उसमें स्वामी श्रद्धानन्द जी की वीरता का प्रेरणादायक उदाहरण, गुरुकुल खोलने की घटना की पृष्ठभूमि, आर्य कन्या विद्यालय की स्थापना, लोकप्रिय उर्दू पत्र सद्धर्म प्रचारक को बन्द कर आर्थिक हानि उठाकर भी पत्र को हिन्दी में प्रकाशित करना आदि स्वामी श्रद्धानन्द जी के अनेक कार्यो पर प्रकाश डाला। गांधी जी द्वारा स्वामी श्रद्धानन्द को शुद्धि कार्य बन्द करने को कहने पर स्वामी श्रद्धानन्द जी के उत्तर को भी विदुषी छात्रा ने प्रस्तुत किया जिसमें उन्होंने कहा था कि तुम तबलीग बन्द करवा दो, मैं शुद्धि बन्द करवा दूंगा। उन्होंने कहा कि स्वामी जी मानते थे कि देश व धर्म के लिए आवश्यकता पड़ने पर संन्यासियों को भी तलवार उठाने का अधिकार है।

इसके बाद तपोवन विद्या निकेतन के बच्चों ने स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन पर आधारित एक नाटक प्रस्तुत किया जो बहुत ही प्रभावशाली था और सभी दर्शकों ने उसकी प्रशंसा की। इस नाटक में स्वामी दयानन्द जी, स्वामी श्रद्धानन्द जी और श्रद्धानन्द जी के पिता नानकचन्द जी के परस्पर संवादों को प्रस्तुत किया गया था। डा. वेद प्रकाश आर्य जी ने अपने सम्बोधन में कहा कि हम आज स्वामी श्रद्धानन्द जी को स्मरण कर रहे हैं। यदि स्वामी दयानन्द जी न आते तो हमें स्वामी श्रद्धानन्द, पं. लेखराम और पं. गुरुदत्त आदि भी न मिलते। उन्होंने गुरुकुल खोलने की पृष्ठभूमि को भी स्मरण कराया और कहा कि आज भी उनका स्थापित किया गया गुरुकुल लहलहा रहा है। आपने सन् 1919 में जलियावाला बाग काण्ड के बाद कांग्रेस का वहां अधिवेशन कराये जाने का वर्णन प्रस्तुत किया। विद्वान वक्ता ने स्वामीजी द्वारा सन् 1926 में **''लिबरेटर''** पत्र का आरम्भ करने और हिन्दू महासभा की स्थापना में किए योगदान की भी चर्चा की। स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा जामा मस्जिद से दिये गये उपदेश का उल्लेख भी उन्होंने किया। उन्होंने कहा कि दूसरों की चालाकी को समझो, उसमें फंसो मत और दूसरों के साथ चालाकी मत करो क्योंकि हम आर्य हैं। एक कविता सुनाकर उन्होंने अपने प्रवचन को विराम दिया। आयोजन में जातिवाद व अस्पृश्यता के विरुद्ध आन्दोलन करने वाले श्री दौलत सिंह कुंवर को भी सम्मानित किया गया। ''प्रभु का नाम तू जपले बन्दे, जीवन है यह थोड़ा'' भजन को श्री वेदवसु, पुरोहित जी ने गाकर प्रभावशाली रूप में प्रस्तुत किया। देहरादून के बुजुर्ग आर्यसमाजी और अनेक ग्रन्थों के रचयिता श्री चमनलाल रामपाल ने स्वामी दयानन्द जी के जीवन पर एक ओजस्वी कविता प्रस्तुत की। द्रोणस्थली कन्या गुरुकुल की आचार्या डा. अन्नपूर्णा ने अपने सम्बोधन में कहा कि उसी मनुष्य का जीवन सफल होता है जो देश व समाज को कुछ देता है। उन्होंने कहा कि स्वामीजी का जन्म व उनकी मृत्यु भी प्रेरणादायक है। आचार्या जी ने कहा कि वेद कहता है कि हम अपनी मातृभूमि के लिए अपना जीवन बलिदान कर दें। उन्होंने बताया कि स्वामी श्रद्धानन्द जी ने वेदों की इस शिक्षा को अपने जीवन में चरितार्थ कर दिखाया। विदुषी आचार्या ने कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द हिन्दू व अन्य मतों के पाखण्डों को देखकर नास्तिक बने थे। स्वामी दयानन्द जी के जीवन को देखकर, उनके उपदेशों को सुनकर तथा सत्यार्थ प्रकाश को पढ़ कर वह पुनः आस्तिक बने। विदुषी वक्ता ने कहा कि स्वामी दयानंद व स्वामी श्रद्धानंद ने देश व समाज की प्रशंसनीय सेवा की है। उन्होंने कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द जी ने देश व धर्म की रक्षा के लिए गुरुकुल खोला था।

वैदिक साधन आश्रम, तपोवन के यशस्वी मंत्री इ. श्री प्रेमप्रकाश शर्मा ने अध्यक्षीय भाषण दिया। उन्होंने कहा कि देश के सभी नागरिकों में राष्ट्रीयता की भावना होना और अस्पृश्यता निवारण देश की आजादी व एकता के लिए आवश्यक हैं। उन्होंने कहा कि कांग्रेस की कथनी व करनी में एकता न होने के कारण स्वामी श्रद्धानन्द ने कांग्रेस को छोड़ दिया था और स्वयं देश की एकता, अखंडता और स्वतन्त्रता के लिए प्रशंसनीय कार्य किया था। उन्होंने बताया कि भविष्य में तपोवन आश्रम में पं. लेखराम जी की जयन्ती व बलिदान दिवस के आयोजन भी किये जायेंगे। सभी वक्ताओं, श्रोताओं व आयोजन में सहयोग करने वाले सभी सहभागियों का उन्होंने धन्यवाद किया। जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा, देहरादून के मंत्री श्री महेन्द्र सिंह चौहान ने सभा का संचालन बहुत योग्यता के साथ किया। कार्यक्रम सफल रहा। अन्त में ऋषि लंगर सम्पन्न हुआ। देहरादून से प्रकाशित होने वाले अनेक समाचार पत्रों ने इस कार्यक्रम को अपने समाचार पत्र में सम्मानित स्थान प्रदान किया।

वैदिक धर्म

–ज्ञानेश्वरार्य, एम.ए. दर्शनाचार्य

(1) वैदिक धर्म संसार के सब मतों और सम्प्रदायों से अधिक प्राचीन है। यह सृष्टि के प्रारंभ से अर्थात् 1,96,08,53,116 वर्ष से है।

(2) संसारभर के दूसरे मत, पंथ या संप्रदाय किसी न किसी पैगम्बर, मसीहा, युगपुरुष, महात्मा आदि के द्वारा प्रवर्तित किये गये हैं, किन्तु वैदिक धर्म ईश्वरीय है।

(3) वैदिक धर्म में एक, निराकार, सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, न्यायकारी, ईश्वर को ही पूज्य=उपास्य माना जाता है, उसी की उपासना की जाती है।

(4) ईश्वर अवतार नहीं लेता अर्थात उसको सृष्टि की रचना, पालन और विनाश के लिए शरीर धारण करने की आवश्यकता नहीं होती है।

(5) जीव और ईश्वर (=ब्रह्म) एक नहीं है, बल्कि दोनों अलग–अलग हैं, और प्रकृति इन दोनों से अलग तीसरी वस्तु है। ये तीनों अनादि हैं।

(6) वैदिक धर्म के सब सिद्धान्त सृष्टिक्रम के नियमों के अनुकूल हैं तथा ये सिद्धान्त विज्ञान की कसौटी पर खरे उतरते हैं।

(7) जिससे मनुष्य दु:ख से तैर जाता है, उसको तीर्थ कहते हैं। जैसे कि विद्या का अध्ययन, यम–नियमों का पालन, योगाभ्यास, यज्ञ, सत्संग आदि।

(8) भूत, प्रेत डाकिन आदि के प्रचलित स्वरूप को वैदिक धर्म में स्वीकार नहीं किया जाता है, यह सब कल्पना मात्र हैं और अज्ञानी स्वार्थी व्यक्तियों के द्वारा चलाये गये हैं।

(9) स्वर्ग और नरक किसी स्थान विशेष में नहीं होते। जहाँ सुख है वहाँ स्वर्ग है और जहाँ दु:ख होता है वहाँ नरक है।

(10) स्वर्ग के कोई अलग से देवता नहीं होते। माता, पिता, गुरु, विद्वान् तथा पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु आदि ही स्वर्ग के देवता होते हैं।

(11) राम, कृष्ण, शिव, ब्रह्मा, विष्णु आदि हमारे प्राचीन महापुरूष थे। उनके जीवन चरित्र हमारे लिये प्रेरक व अनुकरणीय हैं।

(12) जो मनुष्य जैसा शुभ या अशुभ कर्म करता है उसको वैसा ही सुख या दु:खरूप फल अवश्य मिलता है। ईश्वर किसी भी मनुष्य के पाप को किसी परिस्थिति में क्षमा नहीं करता है।

(13) मनुष्य मात्र को वेद पढ़ने का अधिकार है, चाहे वह स्त्री हो या शूद्र।

(14) कर्म के आधार पर मानव समाज को चार भागों में बाँटा जाता है जिन्हें चार 'वर्ण' कहते हैं। (1) ब्राह्मण (2) क्षत्रिय (3) वैश्य (4) शूद्र।

(15) व्यक्तिगत जीवन को भी चार भागों में बाँटा गया है, इन्हें चार आश्रम कहते हैं। 25 वर्ष की अवस्था तक ब्रह्मचर्याश्रम, 50 वर्ष की अवस्था तक गृहस्थाश्रम, 75 वर्ष की अवस्था तक वानप्रस्थाश्रम और इसके आगे संन्यासाश्रम माना गया है।

(16) जन्म से कोई भी व्यक्ति ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, या शूद्र नहीं होता। अपने-अपने गुण, कर्म, स्वभाव से ब्राह्मण आदि कहलाते हैं। चाहे वे किसी के भी घर में उत्पन्न हुए हों।

(17) सफाई का काम करने वाला, चमार आदि कोई भी मनुष्य, जाति या जन्म के कारण अछूत नहीं होता। जो गन्दा है वह अछूत है। चाहे वह जन्म से ब्राह्मण हो या शूद्र या अन्य कोई।

(18) वैदिक धर्म पुनर्जन्म को मानता है। अच्छे कर्म अधिक करने पर अगले जन्म में मनुष्य का शरीर और बुरे कर्म अधिक करने पर पशु, पक्षी, कीट, पतंग आदि का शरीर मिलता है।

(19) वेद के अनुसार उत्तम कर्म करने से व्यक्ति भविष्य में पाप करने से बच सकता है किन्तु किये हुए पाप कर्मों के फल से नहीं बच सकता।

(20) पंचमहायज्ञ करना प्रत्येक वैदिकधर्मी के लिए अनिवार्य है। 1. ब्रह्मयज्ञ (ईश्वर का ध्यान-उपासना करना) 2. देवयज्ञ (हवन करना) 3. पितृयज्ञ (माता-पिता, सास-ससुर आदि की सेवा करना) 4. बलिवैश्वदेवयज्ञ (गाय, कुत्ता आदि पशु पक्षी तथा विधवा, अनाथ, विकलांग आदि की अन्न आदि से सेवा/सहायता करना) 5. अतिथियज्ञ (विद्वान् संन्यासी, उपदेशक आदि से उपदेश ग्रहण करना और उनकी सेवा सत्कार आदि करना)।

(21) जीवित माता-पिता, गुरु, विद्वान आदि की सेवा करना ही 'श्राद्ध' कहलाता है। बड़े वृद्धों को खिलापिलाकर उन्हें तृप्त करना ही 'तर्पण' कहलाता है।

(22) मनुष्य के शरीर, मन तथा आत्मा को सुसंस्कारी (उत्तम) बनाने के लिए नामकरण, यज्ञोपवीत इत्यादि 16 संस्कारों का करना कर्तव्य है।

(23) छूआ-छूत, जाति-पाति, जादू-टोना, डोरा-धागा, ताबीज, शकुन, फलित ज्योतिष, हस्तरेखा, नवग्रहपूजा, मूर्तिपूजा, गंगा आदि नदियों में स्नान से पाप छूट जाना, अंधविश्वास, बलिप्रथा, सतीप्रथा, मांसाहार, मद्यपान, बहुविवाह आदि बातों का वैदिक धर्म में निषेध है।

(24) वेद के अनुसार जब मनुष्य सत्य ज्ञान को प्राप्त करके निष्काम भाव से शुभ कर्मों को करता है और शुद्ध उपासना से ईश्वर के साथ सम्बन्ध जोड़ लेता है, तब उसकी अविद्या (=राग-द्वेष आदि की वासनाएं) समाप्त हो जाती हैं, तभी जीव की मुक्ति होती है। मुक्ति में जीव 36,000 बार सृष्टि के बनने-बिगड़ने के काल तक = 31 नील, 10 खरब, 40 अबर वर्ष तक सब दुःखों से छूटकर केवल आनन्द का ही भोग करके फिर लौट कर मनुष्य जन्म लेता है।

(25) वैदिक धर्मी मिलने पर परस्पर 'नमस्ते' शब्द बोलकर अभिवादन करते हैं।

(26) वेद में परमेश्वर के अनेक नामों का निर्देश किया गया है, जिनमें मुख्य नाम 'ओ3म्' है।

आर्य समाज क्या है

—पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय

आर्य समाज क्या है? आर्य शब्द का अर्थ है श्रेष्ठ या अच्छा और समाज का अर्थ हुआ अच्छे व्यक्तियों की सभा।

'आर्य समाज' को महर्षि दयानन्द ने अप्रैल सन् 1875 ई० अर्थात् चैत्र सुदी प्रतिपदा सम्वत् 1932 विक्रमी को बम्बई में स्थापित किया था। इसके पश्चात् भारतवर्ष के प्रत्येक नगर और ग्राम में समाज खुल गये। इस समय संसार भर के समाजों की संख्या लगभग 8000 से भी अधिक है।

आर्य समाज के नियम

आर्य समाज के नियम इस प्रकार हैं–

(1) सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सबका आदि मूल परमेश्वर है।

(2) ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापी, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करने योग्य है।

(3) वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है। वेद का पढ़ना, पढ़ाना और सुनना, सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

(4) सत्य को ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिये।

(5) सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य का विचार करके करने चाहिये।

(6) संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।

(7) सबसे प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार, यथायोग्य बर्तना चाहिये।

(8) अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिये।

(9) प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट नहीं रहना चाहिये, किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझना चाहिये।

(10) सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिये और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।

इन नियमों को देखने से निम्न बातों का पता चलता है कि–

(1) ईश्वर एक है।

(2) वेद इश्वर का ज्ञान है इसलिये आर्यों को वेद पाठ अवश्य करना चाहिये।

(3) यदि कभी मालूम हो जाये कि जो बात हम मानते या करते हैं वह असत्य हैं तो उनको छोड़ देना चाहिये। कभी भी पक्षपात नहीं करना चाहिये।

(4) समाज की भलाई के लिये हर एक को कोशिश करनी चाहिये।

आर्य समाज के सिद्धान्त

ईश्वर विषयक

(1) ईश्वर एक है अनेक नहीं।

(2) ईश्वर निराकार है। उसको आँख से नहीं देख सकते और न ही उसकी मूर्ति बना सकते हैं।

(3) ईश्वर सर्वज्ञ और सर्वव्यापक है। वह सब कुछ जानता है। वह छोटी सी चीज के अन्दर और बाहर भी उपस्थित है।

(4) ईश्वर सर्वशक्तिमान् है अर्थात् वह अपने किसी काम को करने के लिये आँख, कान, नाक आदि शरीर या अन्य किसी चीज या आदमी की बिना किसी सहायता के करता है। जीव और प्रकृति को अनादि मानने से ईश्वर पराश्रित या मुहताज नहीं होता। जीव और प्रकृति ईश्वर के उपकरण नहीं हैं। उपादान उपकरण नहीं होता।

(5) ईश्वर अजन्मा और निर्विकार है। वह मनुष्य के समान जन्म-मरण में नहीं आता। अवतार भी नहीं लेता। राम, कृष्ण ईश्वर के अवतार नहीं थे, वे धर्मात्मा पुरुष थे, इसलिये उनके अच्छे कामों की याद करनी चाहिये और उनका अनुकरण करना चाहिये परन्तु उनकी मूर्तियों को ईश्वर समझ कर नहीं पूजना चाहिये।

जीव विषयक

(1) जीव चेतन है, जिसकी संख्या अनन्त है।

(2) जीव न कभी मरता है न पैदा होता है अर्थात् कभी ऐसा समय नहीं हुआ जब जीव न रहा हो और न ऐसा समय आयेगा जब जीव नहीं रहेगा।

(3) जीव में ज्ञान तो है, पर थोड़ा और शक्ति भी थोड़ी है, इसलिये जीव को अल्पज्ञ कहते हैं।

(4) जीव शरीर धारण करता है। कभी मनुष्य का कभी पशु का, कभी कीड़े आदि योनि का।

(5) जीव जैसा कर्म करता है उसके फल के अनुसार वैसा ही शरीर मिलता है। बुरे कर्म के लिये बुरी योनि और अच्छे कर्म के लिये अच्छी योनि मिलती है। इसी को जीव अवतार कहते हैं। अवतार जीव का होता है, ईश्वर का नहीं।

(6) जीव जब अच्छे कर्म करके सबसे ऊँची अवस्था को पहुँच जाता है तो उसे मोक्ष मिल जाता है अर्थात् शरीर नहीं रहता और स्वतन्त्र विचरता हुआ ईश्वर के आनन्द में मग्न रहता है।

(7) मोक्ष काल (मुक्ति की अवधि) 31 नील 10 खरब और 40 अरब वर्ष के लिये होता है। इसके पश्चात् जीव मोक्ष से वापस लौटता है और सर्वप्रथम उत्तम ऋषियों का शरीर धारण करता है। इस शरीर में यदि अच्छे काम करता है तो फिर मुक्त हो जाता है और यदि बुरे कर्म करता है तो नीचे की योनियों का चक्र आरम्भ हो जाता है।

प्रकृति विषयक

(1) प्रकृति छोटे-छोटे परमाणुओं का नाम है।

(2) यह परमाणु जड़ हैं। इनमें ज्ञान नहीं।

(3) यह परमाणु अनादि और अनन्त हैं अर्थात् न कभी उत्पन्न हुए न कभी नष्ट हुए।

(4) ईश्वर इन्हीं परमाणुओं को जोड़कर सृष्टि बनाता है। आग, पानी और पृथ्वी यह इन्हीं परमाणुओं के संयोग का फल है। सूर्य, चाँद आदि इन्हीं से बने हैं। हमारे शरीर भी इन्हीं परमाणुओं से बने हैं।

(5) जब परमाणु अलग-अलग हो जाते हैं तो उसको प्रलय या ब्रह्मरात्रि कहते हैं। जब सृष्टि बनी रहती है तो ब्रह्मदिन होता है।

वेद

(1) वेद चार हैं। ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद।

(2) वेदों का ज्ञान ईश्वर ने सृष्टि के आरम्भ में चार ऋषियों को दिया। अर्थात्-

अग्नि ऋषि को..................ऋग्वेद।

वायु ऋषि को.....................यजुर्वेद।

आदित्य ऋषि को.................सामवेद।

अंगिरा ऋषि को.................अथर्ववेद।

(3) इन ऋषियों ने वेदों का अन्य ऋषियों और मनुष्यों को उपदेश दिया। संसार भर की सब विद्याएँ वेदों से ही निकलती हैं।

(4) वेद स्वतः प्रमाण हैं परन्तु अन्य पुस्तकें परतः प्रमाण अर्थात् जो बात उन अन्य पुस्तकों में वेद के अनुकूल है वह ठीक है जो वेद विरूद्ध हैं वह गलत।

(5) वेद संस्कृत भाषा में नहीं हैं अपितु देववाणी (प्राकृत भाषा) में हैं। संस्कृत भाषा वेदों की भाषा से निकली है और अन्य सब भाषाएं संस्कृत से।

(6) वेदों में इतिहास नहीं है। वेदों में यौगिक शब्द हैं, रूढ़ी नहीं अर्थात् वेदों में ऐसे शब्द आये हैं जो हमको मनुष्यों के नाम मालूम होते हैं, परन्तु उनके अर्थ मनुष्य नहीं हैं।

(7) वेदों में राम, कृष्ण आदि अवतारों का वर्णन नहीं है।

(8) वेदों में मुख्यतः तीन बातें हैं- ईश्वर के लिये भिन्न-भिन्न अवसरों के अनुकूल प्रार्थनायें, सृष्टि के नियम, मनुष्यों को उपदेश।

(9) वेदों में इन्द्र, अग्नि, वरुण आदि शब्द कहीं-कहीं पर ईश्वर के लिये आये हैं और कहीं भौतिक पदार्थों जैसे आग पानी आदि के लिये। इसका पता संगति से लग सकता है।

(10) पहले संसारभर में वेद मत ही था। पीछे से भिन्न-भिन्न मत पैदा हो गये।

अन्य शास्त्र

आर्य समाज वेदों को तो ईश्वरकृत मानता है, परन्तु इनके अतिरिक्त नीचे लिखे ऋषियों के ग्रन्थों को भी उस हद तक प्रमाणिक मातना है जिस हद तक वह वेदों के अनुकूल हों, जैसे-

(1) **चार ब्राह्मण ग्रन्थ-** ऐतरेय, साम, शतपथ और गोपथ।

(2) **ग्यारह उपनिषद-** ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य, ऐतरेय, तैतरीय, छान्दोग्य, बृहदारण्यक और श्वेताश्वेतर।

(3) **छः दर्शन-** गौतम ऋषि का न्याय, कणाद ऋषि का वैशेषिक, कपिल ऋषि का सांख्य, पतंजली ऋषि का योग, जैमिनी ऋषि का पूर्व मीमांसा और व्यास ऋषि का उत्तर मीमांसा अर्थात् वेदान्त दर्शन।

(4) मानव धर्मशास्त्र या मनुस्मृति।

(5) गोभिल गृह्यसूत्र, पारस्कर गृह्यसूत्र, आश्वलायन गृह्यसूत्र।

(6) स्वामी दयानन्द के ग्रन्थ- सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका, संस्कारविधि, आदि-आदि।

मनुष्य समाज

(1) पहले पहल मनुष्य तिब्बत में (बिना मैथुन

के) उत्पन्न हुए वहाँ से सब जगह फैल गये। आर्य जाति से पहले और कोई जाति नहीं थी। आर्य जाति के ही भिन्न-भिन्न देशों में भिन्न-भिन्न नाम हो गये हैं।

(2) पहले पहल एक आदमी और एक औरत नहीं वरन् बहुत से युवा पुरुष और बहुत सी युवतियाँ अमैथुन रूप में पैदा हुई थी। फिर इन्हीं की सनतान आपस में विवाह करके मैथुनी सृष्टि द्वारा आगे बढ़ती गई।

(3) सब मनुष्य जन्म से समान हैं। गुण, कर्म और स्वभाव के अनुसार उनके ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र नाम होते हैं।

(4) पढ़ने-पढ़ाने वाले विद्वान व्यक्तियों का नाम ब्राह्मण है, शारीरिक रक्षा करने वालों का क्षत्रिय, व्यापार और कला कौशल वालों का वैश्य। जो सेवा करते हैं वह शूद्र हैं। गुण, कर्म और स्वभावानुसार वर्ण बदल जाता है अर्थात् शूद्र, ब्राह्मण हो सकता है और ब्राह्मण शूद्र बन जाता है।

(5) शूद्र का कार्य नीच वर्ग का नहीं है और न ही उससे किसी को घृणा ही करनी चाहिये।

(6) वेद पढ़ने का अधिकार सबको है अर्थात् सभी वर्ग के व्यक्तियों को है।

यज्ञ

पाँच यज्ञ हर आर्य को प्रतिदिन करने चाहिये:

(1) **ब्रह्म यज्ञ**- अर्थात् ईश्वर की पूजा और वेद पाठ।

(2) **देव यज्ञ**- अर्थात् हवन।

(3) **भूत यज्ञ**- अर्थात् चींटी, गाय, कुत्ता आदि आश्रित जीवों को भोजन देना।

(4) **पितृ यज्ञ**- अर्थात् जीवित् माता-पिता का सत्कार। मरे हुए माता-पिता का सत्कार करना असम्भव है। इसलिये मृतकों का श्राद्ध, तर्पण आदि नहीं करना चाहिये।

(5) **अतिथि यज्ञ**- अर्थात् विद्वान साधु, सन्यासी अथवा वेदोपदेशक आदि घर पर आयें तो उनका आदर सत्कार करना।

संस्कार

जीवन में प्रत्येक आर्य के सोलह संस्कार होने चाहिये।

तीन जन्म से पहले-

(1) गर्भाधान (2) पुंसवन (3) सीमन्तोन्नयन।

छः बचपन में-

(1) जात कर्म (2) नामकरण (3) निष्क्रमण

(4) अन्नप्राशन (5) मुण्डन (6) कर्णवेध।

दो विद्या आरम्भ करने के समय-

(1) यज्ञोपवीत (2) वेदारम्भ।

दो विद्या समाप्त करने पर-

(1) समावर्तन (2) विवाह।

तीन पिछली अवस्था में-

(1) वानप्रस्थ (2) सन्यास (3) अन्त्येष्टी।

विवाह

(1) विवाह, कम से कम लड़की का सोलह वर्ष की अवस्था में और लड़के का पच्चीस वर्ष की अवस्था में करना चाहिये।

(2) एक पुरुष एक ही स्त्री के साथ विवाह कर सकता है।

(3) अक्षतयोनि विधवा का अक्षतवीर्य पुरुष के साथ विवाह करना ठीक है।

(4) यदि आवश्यकता हो, तो अक्षतयोनि विधवा का अक्षतवीर्य विधुर के साथ विवाह हो सकता है।

आर्य समाज का संगठन

(1) कम से कम ग्यारह सभासदों का एक समाज होता है।

(2) प्रत्येक सभासद को अपनी आय का शतांश (एक सौ रुपये पर एक रूपया) चन्दे में देना चाहिये।

(3) शतांश चन्दा न देने वाले तथा सदाचार से न रहने वाले व्यक्ति सभासदी से पृथक किये जा सकते हैं।

(4) प्रान्त के समाजों को संगठित करने के लिये प्रान्तीय प्रतिनिधि सभायें हैं। जिनमें प्रत्येक समाज के प्रतिनिधि जाते हैं। प्रतिनिधि भेजने का नियम है कि प्रति 35 सभासद या किसी विशेष काम के लिये एक प्रतिनिधि भेजा जाता है।

(5) प्रान्तीय प्रतिनिधि सभा के प्रबन्ध के लिये एक अन्तरंग सभा होती है।

(6) प्रतिनिधि सभाओं द्वारा चुने हुए सभासदों की सार्वदेशिक सभा है जिसका स्थान दिल्ली में है।

आर्य समाज के मुख्य कार्य

(1) **शिक्षा का कार्य–** भारत में अंग्रेजी शासन की नीति थी कि अंग्रेजी शिक्षा द्वारा भारतीयों को पाश्चात्य सभ्यता में रंग दिया जाये ताकि वे अपनी संस्कृति से विमुख हो जायें इसी उद्देश्य से देश में स्थान–स्थान पर अंग्रेजी विद्यालय खोले गये, आर्य समाज ने देश में भारतीय संस्कृति की रक्षा के लिये सर्वप्रथम पाठशालायें, गुरुकुल और कालेज खोले। इस समय आर्य समाज के आधीन भारतवर्ष में छोटे–ब्ड़े सब मिलाकर कई हजार विद्यालय हैं और इन पर करोड़ों रुपया व्यय होता है। बड़े–बड़े विद्यालयों के नाम यह हैं– डी.ए.वी. कालेज जालन्धर, गुरुकुल कांगड़ी, गुरुकुल वृन्दावन, कन्या महाविद्यालय जालन्धर, डी.ए.वी. कालेज देहरादून, डी.ए.वी. कॉलेज कानपुर, महाविद्यालय ज्वालापुर, हंसराज कालेज दिल्ली आदि।

(2) **अनाथालय–** लगभग पचास अनाथालय, जिनमें अनाथ बच्चे पाले जाते हैं, खोले गये जैसे कि फिरोजपुर, अजमेर, आगरा, बरेली, लखनऊ, भिवानी और देहरादून आदि।

(3) **स्त्री जाति का सम्मान–** आर्य समाज से पूर्व स्त्री जाति के विषय में बड़े ही संकुचित विचार थे। उनको वेद पढ़ने का अधिकार नहीं था और नीच व अपवित्र समझा जाता था। आर्य समाज ने वेद शास्त्रों से यह बताया कि नारी को भी वेद पढ़ने का अधिकार है और उसका शिक्षित होना आवश्यक है क्योंकि वास्तव में मताा ही बालक को बनाने वाली है। इसके लिये कन्या गुरुकुल, कन्या पाठशालाएं और विधवा आश्रम जिनके द्वारा विधवाओं की सहायता होती है, खोले गये और हजारों विधवाएं इस प्रकार पतित होने से बचा लीं गई। आर्य समाज ने पुरुष और स्त्री के समान अधिकार बताये और इस प्रकार स्त्री जाति को सम्मान दिलाया।

(4) **हिन्दी का प्रचार–** हिन्दी आज राष्ट्रभाषा के पद पर सुशोभित है। इसकी उन्नति का श्रेय जिन संस्थाओं को है, उनमें आर्य समाज का स्थान सबसे ऊँचा है। भारतवर्ष में कई भाषाएं बोली जाती हैं जो देश की एकता में

बाधक हैं। महर्षि दयानन्द ने स्वयं गुजराती और संस्कृत का विद्वान होते हुए भी सबसे पहले यह अनुभव किया कि राष्ट्रीय एकता के प्रचार के भारत उनका अनुयायी होने के लिये तैयार था फिर भी उन्होंने उन क्षणिक प्रलोभनों पर लात मार दी, तो हमारा सिर ऋषि के तपोबल के सामने स्वभावत: स्वयं झुक जाता है। यदि स्वामी दयानन्द ऐसे ना होते तो वह ऋषि कहलाने के कदापि योग्य न होते। उनमें और साधारण सुधारकों में कोई भेद न होता। अभी ऋषि दयानन्द की मृत्यु को 65 वर्ष ही हुए हैं। अभी समय इतना निकट है कि हमको उनका वास्तविक स्वरूप दिखाई नहीं पड़ता। जब कई शताब्दियाँ व्यतीत हो जायेंगी, उस समय ऋषि के गौरव को भली प्रकार समझ सकेंगे।

जो लोग आर्य समाज पर संकुचित (Dogmatic) होने का दोष लगाते हैं, वह यह नहीं जानते कि अनियमता का नाम उदारता नहीं है। किसी समाज के संगठन के लिये निश्चित सिद्धान्तों की बहुत बड़ी आवश्यकता है। हिन्दू जाति के वर्तमान असंगठन का बहुत बड़ा कारण यह है कि इसके सिद्धान्त निश्चित नहं रहे। जो आया उसने मनमानी की और जाति के टुकड़े-टुकड़े हो गये। ऋषि दयानन्द ने इसी रोग का निराकरण किया और समस्त जाति को एक सूत्र में बांधने का प्रयत्न किया। जब तक आर्य समाज ऋषि के बताये हुए नियमों पर कटिबद्ध रहेगा, उसकी उन्नति ही होती जायेगी। परन्तु जिस प्रकार ऋषि दयानन्द ने चिरस्थायी लाभ के लिये क्षणिक लाभों की परवाह नहीं की, इसी प्रकार आर्य समाज को भी दृढ़ रहना चाहिये। जो लोग धूप और मेह फलस्वरूप बड़ी संख्या में अछूत कहे जाने वाले भाई ईसाई और मुसलमान बनते जा रहे थे। आर्य समाज ने उनको वेद तक पढ़ने का अधिकार दिलाया और स्थान-स्थान पर उनके लिये पाठशालायें खोलीं। आर्यसमाज ने सबसे पहले अछूतोद्धार आंदोलन चलाया जिसे बाद में हमारी सरकार ने बहुत बदल दिया।

(10) **वेदों का प्रचार बढ़ाया**- आइये, ऐसे आर्य समाज के सभासद बनिये क्योंकि इसी से देश का कल्याण होगा।

नोट- जो सज्जन आर्य समाज के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करना चाहते हैं, वे निम्नलिखित पुस्तकें पढ़ें-

1. सत्यार्थ प्रकाश - महर्षि दयानन्द
2. ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका -महर्षि दयानन्द
3. आर्य समाज क्या है ? -महात्मा नारायण स्वामी
4. आर्य समाज के नियमों की व्याख्या स्वामी सत्यानन्द
5. निर्णय के तट पर -अमर स्वामी सरस्वती

(प्राचीन शास्त्रार्थों का संग्रह) लाजपत राय अग्रवाल

तपोवन आश्रम देहरादून हेतु पुरोहित की आवश्यकता

वैदिक साधन आश्रम, तपोवन, नालापानी, देहरादून को एक व्यवहार कुशल, मृदुभाषी पुरोहित की आवश्यकता है। नि:शुल्क आवास व्यवस्था के साथ मानदेय व भोजन व्यय कर्मकाण्डीय योग्यता व अनुभवानुसार देय होगा।

सम्पर्क सूत्र: श्री प्रेम प्रकाश जी शर्मा, सचिव, वैदिक साधन आश्रम, तपोवन, दे.दून, मो. 9412051586

With Best Compliments From :

KAMAL PLASTOMET

930/1, Behrampur Road, Village Khandsa, Gurgaon-122 001 (Haryana), Tel. : 0124-4034471, E-mail : krigurgaon@rediffmail.com

आर्य समाज के ज्वलन्त प्रश्न

—चमनलाल रामपाल

''समय किसी की प्रतीक्षा नहीं करता'' यह वाक्य जितना सत्य है उतना सत्य यह तथ्य भी है कि संसार में कुछ ऐसे ओजस्वी व्यक्तित्व भी आते हैं जिनके पीछे चलने के लिये, समय स्वयं अपना रास्ता बदलने के लिये विवश हो जाता है। महान भारत का लम्बा इतिहास ऐसी अनेक युग परिवर्तक विभूतियों के इतिहास की पुष्टि करता है।

ऐसी अमर विभूतियों के युग परिवर्तक इतिहास में आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द का नाम व स्थान प्रथम श्रेणी में आता है। महर्षि दयानन्द युग के वह प्रथम महान ऋषि हैं जिन्होंने सहस्त्रों वर्षों से अवरुद्ध हुये वैदिक पथ पर अज्ञानता से उगे अंधविश्वासी, भ्रामक व मिथ्या अवधारणा रूपी झाड़ झंकार को काट छांट, उखाड़ व जड़मूल से नष्ट कर वर्तमान युग को पुनः वैदिक युग से जोड़ने का अथक प्रयत्न किया है। महर्षि अरविन्द घोष ने महर्षि दयानन्द को श्रद्धांजलि देते हुये कहा था कि 5000 वर्षों से खोई, ईश्वरी ज्ञान, वेदों पर लगे ताले की चाबी महर्षि दयानन्द ने ढूंढ निकाली है।

वास्तव में महर्षि दयानन्द वह अजेय योद्धा है जिन्होंने अपने तप, त्याग और सत्य की ओज से मानव समाज के प्रत्येक क्षेत्र से प्रत्येक अमानवीय तत्व को जला, स्वच्छ रूप में उसका कायाकल्प करने का सफल प्रयत्न किया जिसका प्रभाव धार्मिक, सामाजिक व राजनीतिक क्षेत्रों में आमूलचूल सुधार में पड़ा। दादाभाई नौरोजी से लेकर राजगोपालाचार्य व गांधीजी जैसे प्रमुख प्रसिद्ध राजनैतिक नेता उन्हें भारत की स्वतंत्रता व स्वराज्य का मंत्रदाता मानते हैं। महाकवि रवीन्द्रनाथ टैगोर से लेकर महाकवि निराला व महाकवियित्री महादेवी वर्मा ने उन्हें मानवता का दूत कहते, उनकी निर्भीकता, निर्मलता और सत्यता का गुणगान किया है। अंग्रेजों ने जब अपने मुंह मिया मिट्ठू बनते भारत में अपने साम्राज्य को एक आदर्श राज्य, संसार को बताने का प्रयत्न किया तो महर्षि के सात समुन्दर पार भेजे एक दूत (शिष्य) ने एक वाक्य की ललकार से ही यूरोप से लेकर अमेरिका तक को निरुत्तर कर दिया था। यह दूत अथवा शिष्य था। श्याम जी कृष्ण वर्मा जिसे स्वामी दयानन्द जी ने अपने मिशन के लिये यूरोप में भेजा था। उन्होंने अंग्रेजी के मिथ्या प्रचार का उत्तर इन शब्दों में दिया "Good Government is not substitute of self Government" आर्य बन्धुओं को स्मरण होगा महर्षि के शिष्य श्याम जी कृष्ण वर्मा ने इंडिया हाउस लन्दन में अपने गुरु दयानन्द के ही वह शब्द दोहराये थे जो उन्होंने भारत में कहे थे कि ''अपना बुरे से बुरा राज्य भी विदेशी के अच्छे से अच्छे राज्य से उत्तम होता है।

आर्य बन्धुवर! मेरा यह बस कहने का तात्पर्य यह है कि महर्षि दयानन्द ने अपने जीवन के चमत्कारी प्रदर्शन में, हंस की तरह, सत्य और असत्य को निखार मानव समाज के कल्याण के लिये जो वैदिक पथ प्रशस्त किया है उस पथ पर चलने और चलाने के लिए ही उन्होंने 1875 ई. में आर्य समाज की स्थापना की थी और आर्य समाज को ''कृणवन्तो विश्यमार्यम'' का दायित्व सौंपा

था। निसंदेह आर्य समाज के कर्णधारकों ने 72 वर्षों तक अपने इस दायित्व का सिर पर कफन बांध कर निर्वाह किया। इस व्रत को पालने के लिये यदि शीश देने की आवश्यकता पड़ी तो आर्य मुसाफिर पं. लेखराम, स्वामी श्रद्धानन्द, लाला लाजपतराय और पं. रामप्रसाद के रूप में शीश चढ़ाये। जीवन समर्पण करने की आवश्यकता पड़ी तो आर्य मुसाफिर पं. लेखराम, स्वामी श्रद्धानन्द, लाला लाजपतराय और पं. रामप्रसाद के रूप में शीश चढ़ाये। जीवन समर्पण करने की आवश्यकता पड़ी तो महात्मा हंसराज, स्वामी दर्शनानन्द महात्मा नारायण स्वामी, पं. गुरुदत्त विद्यार्थी, भाई परमानन्द, लाला हरदयाल, श्याम जी वर्मा इत्यादि के रूप में अपने जीवन को तप की भट्ठी में तपाया और संसार में आर्य समाज के शुद्ध स्वरूप का अस्तित्व स्थापित कर दिया। ऐसे सरीखे आर्य समाजियों के 72 वर्षों के तप व बलिदानों के योग ने ही 1947 ई. को देश की शताब्दियों की गुलामी की जंजीरे तोड़ भारत माता को स्वतंत्र कराया। प्रसिद्ध कांग्रेसी नेता डॉ. सीताराम रमैया ने भारत का इतिहास लिखते हुये स्पष्ट और प्रखर अक्षरों में लिखा है कि भारत के स्वतंत्रता संग्राम में सर्वाधिक योगदान व बलिदान जो लगभग 80 प्रतिशत है स्वामी दयानन्द के अनुयायियों आर्य समाजियों का रहा।

राष्ट्र की स्वतंत्रता आर्य समाज का पहला लक्ष्य था जो 1947 ई. में राजनैतिक रूप में प्राप्त हो गया। परन्तु आर्य समाज यहां यह भूल गया कि जिस प्रकार नवजात शिशु के निर्माण के लिये उसे सही पालन पोषण और शुद्ध संस्कार की आवश्यकता होती है उसी प्रकार नवजात राष्ट्रीय राजनैतिक स्वतंत्रता की भी शुद्ध सामाजिक कवच की आवश्यकता है और यह कार्य केवल आर्य समाज ही कर सकता था। जिससे वह चूक गया। फलतः भारतीय सामाजिका कृति जो शताब्दियों से अनार्यों के आवागमन से धूमिल हो गयी थी उसने भारतीय राजनैतिक व्यवस्था को भी धूमिल कर दिया और आज राष्ट्रीय स्थिति यह है कि आर्य हिन्दू जाति अपने ही राष्ट्र में प्रवासी बनती जा रही है। कहने को राष्ट्र स्वतंत्र है, परन्तु यह स्वतंत्रता कैसे है जिसमें राष्ट्रीयता ही लोप होती जा रही है। न अपनी धर्म संस्कृति की पालना, न अपनी मातृभाषा का सम्मान। गौरवशाली अतीत पर गर्व नहीं, वर्तमान सुधारने की सोच नहीं और न धुंधले भविष्य की चिंता..... कितना भयावह चिंतन है यह आर्य जाति और आर्यों के देश के संदर्भ में..... माना किसी भी दशा में आर्य समाज के इतिहास में निराशावाद का कोई स्थान नहीं है परन्तु यह कड़वी गोली आर्यों को निगलनी ही पड़ेगी कि देश और जाति की यह दुरावस्था उनके ऊंध जाने पर हो आई है। राष्ट्र का प्रहरी जब ऊंघने या सोने लगता है तो देश की ऐसी स्थिति अवश्यंभावी होती है। यदि कोई आर्य बंधु मेरी इस कथनी से सहमत नहीं तो मुझे बताये कि यदि हम आर्य सोये न हाते तो हमारी वर्षों और अरबों रुपयों की अर्जित सम्पत्ति जो आर्य वीरों ने अपने तप त्याग से आर्य स्कूलों और डीएवी कॉलेजों के रूप में भावी ऊंची आर्य पीढ़ी तैयार करने के लिये स्थापित की थी। सरकार आंख झपकते कैसे हमसे छीन ले गयी ? और हम उसका इतना विरोध भी न कर पाये जितना एक मासूम बच्चा उस बिल्ली का करता है जो उसके हाथ से रोटी का टुकड़ा छीनती है। आह! इतनी निराशाजनक स्थिति में हम पहुंच गये हैं कि दिन-प्रतिदिन हमारा अस्तित्व सिकुड़ता जा रहा है। हमारे विशाल भवन निर्जीव पड़े हैं। भूमि लावारिस

पड़ी है जिस पर लोग पैनी दृष्टि गढ़ाये बैठे हैं। सत्यता तो यहां तक जाती है, प्रचारक अपने एक-एक शब्द का मूल्य आर्य समाजों से चुकाने का प्रयत्न करते हैं। प्रोहित परहित नहीं अपने हित में कार्यरत हैं। हमारे वार्षिक चुनाव तक आर्य सदस्यगण नहीं पुलिस सम्पन्न कराती हैं। हमारे सामाजिक विरोधों का निर्णय समाज की सभासद बैठकों में नहीं, कचहरियों में होता है.....आह! कितना कष्टकारी परिवर्तन है। यह आर्यों और आर्य समाजों में। कभी आर्य समाजियों को झूठ और सत्य का निर्णय करने के लिये कचहरियों में आमंत्रित किया जाता था और आज स्वयं झूठ और सत्य की तराजू में तुलने के लिये आर्य समाजी कचहरियों के धक्के खा रहे हैं।

आर्य बन्धुओं! इस भयावह स्थिति ने हमारे सामने एक ज्वलन्त प्रश्न खड़ा कर दियाहै । वह यह कि...... क्या इस लोंटधारी ब्रह्मचारी दयानन्द के पिये विष के प्याले निष्फल हो जायेंगे अथवा पं. लेखराम और स्वामी श्रद्धानन्द जी जैसे वीर आर्य शहीदों का बहा रक्त बिना रंग लाये ही सूख जायेगा.. ... नहीं, नहीं कदापि नहीं, कोई भी आर्य समाज इसे सहन नहीं कर सता, यह मेरा दृढ़ विश्वास है। परन्तु बंधुवर केवल इस भावुकता से तो आर्य समाज का वास्तविक स्वरूप नहीं निखर पायेगा। इसके निखार के लिये कुछ कर गुजरना होगा और इस कर गुजरने के लिये तो फिर एक ही मूल मंत्र है, समर्पण, पूर्ण समर्पण, आर्य समाज के लिये अपना पूर्ण समर्पण। प्रत्येक आर्य समाजी अपना कद बढ़ाने के स्थान पर आर्य समाज के कद बढ़ाने को प्राथमिकता दें। अपनी प्रतिष्ठा को आर्य समाज की प्रतिष्ठा से जोड़ा जाये और आर्य समाज के दस नियमों के अनुसार अपने जीवन को ढालते, आर्य समाज की नियमावली का दृढ़ता से पालन किया जाये।

मेरे व्यक्तिगत दृष्टिकोण से इस समर्पण में निम्नलिखित दृष्टिकोण रखने की आवश्यकता है।

(1) सर्वप्रथम आर्य समाजों ने जो अर्थ को ही आधार माना हुआ है अर्थात् धन की धुन से धनवान आर्य समाज को ही समाज की समृद्धि मानते हैं, यह दृष्टिकोण आर्य समाज के हित में नहीं हैं, अपितु आर्य समाजों में झगड़े और क्लेश की जड़ है। अर्थ, संस्था में साधन तो हो सकता है लक्ष्य नहीं। माना, समाज के प्रचार, प्रसार के कार्यों में अर्थ का विशेष स्थान है, परन्तु आर्य समाज जैसी संस्था का अर्थकोष बैंक (बैंक बैलेंस) नहीं, जनता कोष है। इसलिये आर्य समाज में आय-व्यय का संतुलन रहना चाहिये अर्थात परिश्रम से धन जुटाये परन्तु दिल खोलकर उसका प्रयोग आर्य समाज के प्रचार-प्रसार व सेवा कार्यों में लगायें।

(2) प्रत्येक आर्य समाज अपना वार्षिकोत्सव प्रतिवर्ष, निर्धारित समय पर रखें और उसे पूरी लगन से एक आदर्श उत्सव बनाने का प्रयत्न करें जिसमें कम से कम जिले की सभी आर्य समाजें सम्मिलित होकर योगदान दें। दयानन्द मिशन को समर्पित, योग्य, विद्वान, प्रचारक, संगीतकार इसमें बुलाये जायें जिनमें एक दो प्रभावशाली विद्वान बाहर के हो जो समाज की यथा अर्थ स्थिति धन ले। (इस संदर्भ में जिला आर्य उप-प्रतिनिधि सभा से सम्पर्क किया जा सकता है)।

(3) प्रत्येक आर्य समाज का वार्षिक निर्वाचन, निश्चित समय पर अवश्य हो, जिसमें आर्य समाज की नियमावली अनुसार मत देने वाले और सभासद व प्रत्याशी ही भाग लें जिनका अधिक से अधिक तीन वर्ष में सम्मति से कोई सभासद अथवा अधिकारी अपने स्थान पर बना रह सकता है परन्तु नैतिकता के आधार पर एवं सामाजिक हित में उसे स्वयं दूसरी पंक्ति को तैयार करने के लिये अपनी उपयोगिता कम से कम एक वर्ष तक संरक्षक के रूप में अलग रहकर सिद्ध करनी चाहिये।

(4) प्रत्येक आर्य समाज का वर्ष का आय-व्यय का लेखा-जोखा निरीक्षण द्वारा वार्षिक निर्वाचन के पूर्व हो जाना चाहिये ताकि समाज का प्रत्येक सदस्या निर्वाचन के समय इच्छानुसार वाचन कर सकें।

वार्षिक चुनाव के संदर्भ में प्राय: देखा गया है कि कई समाजे निश्चित समय पर चुनाव न करने की ढील करती हैं अथवा कई नियमानुसार चुनाव कराते ही नहीं अथवा केवल प्रस्ताव द्वारा चुनाव प्रक्रिया पूरी कर लेते हैं, परन्तु यह वैध नहीं है। इस स्थिति में आर्य उप-प्रतिनिधि सभा को अधिकार होना चाहिये कि वह स्वयं संबंधित समाज के चुनाव की तिथि घोषित कर वहां चुनाव करा दें। ऐसा करना जहां निर्वाचित समाजों में अनुशासनता आयेगी। वहां सामाजिक कार्यों में भी रुचि दायित्व जागेगा।

प्रत्येक समाज को यह ज्ञात होना चाहिए कि समाज के वार्षिक चुनाव में जिला आर्य उप-प्रतिनिधि सभा के किसी सभासद की उपस्थिति और साक्षी ही चुनाव की वैध ठहराती है। इसलिए चुनाव से पूर्व जिला आर्य उप-प्रतिनिधि सभा को सूचित करना, प्रत्येक समाज की अनिवार्यता है।

जिला सभा के वार्षिक चुनाव पश्चात नव-निर्वाचित सभासदों की सूची सहित समाज की वर्ष की सापेक्ष गतिविधियां, कार्यकारिणी बैठकों का विवरण तथा समाज की आय-व्यय की सूची इत्यादि भेजनी चाहिए ताकि जिला सभा इन जानकारियों के आधार पर संबंधित समाज को लाभकारी परामर्श दे सके।

अंत में आर्य समाजों के आत्म सम्मान से जुड़े इस सुझाव की मैं जिले की प्रत्येक आर्य समाज से यह पुष्टि चाहता हूं कि प्रत्येक समाज अपना कोई भी वाद अथवा झगड़ा कोट कचहरियों में न जे जाकर, जिला आर्य उप-प्रतिनिधि सभा में रखे और जिला सभा का निर्णय निर्णायक मानें।

अत: इसका उल्लंघन करने वाले सदस्य को जिला सभा समाज की सदस्यता से निरस्त कर सके ताकि समाजों में अनुशासन प्रशस्त किया जा सके। बंधुवर! यह सुझाव समाज के किसी अधिकार के हनन की बात नहीं, बल्कि आर्यजनों के सम्मान व प्रतिष्ठा का प्रश्न है। क्या हम आर्य अब इस योग्य भी नहीं रहे कि अपने निर्णय अपने घर में बैठकर न कर सके। यदि ऐसा है तो हमें अपने साथ आर्य शब्द का प्रयोग बिल्कुल नहीं करना चाहिए। परन्तु मेरा विश्वास है कि ऐसी बात नहीं, आर्यों में आर्यता का अब भी अभाव नहीं है। केवल मिल बैठकर मनन करने की आवश्यकता है। इसलिए प्रार्थना है कि उपरोक्त प्रस्ताव (सुझाव) की पुष्टि में, प्रत्येक समाज संकल्प के साथ लिखित रूप में जिला सभा को अपना निर्णय भेजने की कृपा करें।

ब्रह्माण्ड और पिण्ड में गायत्री

—महात्मा प्रभु आश्रित जी महाराज

गणपति— मेरी यह विनय है कि उस दिन महाराज ने गायत्री और ब्रह्माण्ड का मेल करके समझाया था— 'यथा ब्रह्माण्डे तथा पिण्डे' इस विचार से यदि ब्रह्माण्ड की गायत्री है, तो फिर पिण्ड भी गायत्री बनेगा। कृपा करके यह बात हमें समझा दीजिए।

सं.म.— तुम्हारा प्रश्न निस्संदेह बड़ा गम्भीर है शाबाश! ऐसे ही विचारशील बुद्धि से अपने संशय और सन्देह दूर करने का प्रयत्न करना चाहिए, देखो! ब्रह्माण्ड में जितने भी देवता (नक्षत्र) काम कर रहे हैं, उन सब के प्रतिनिधि अथवा अधिष्ठाता हमारे शरीर में विद्यमान हैं, उन सबका परस्पर सम्बन्ध है। सूर्य की प्रतिनिधि हमारी आंख है, वायु की नासिका, अग्नि का मुख, आकाश के कर्ण इत्यादि...

गणपति (बात काटकर) महाराज यह मेरा अभिप्राय नहीं। जैसे आपने गायत्री के 24 अक्षरों का मेल ब्रह्माण्ड की 24 ज्योतियों से मिलाया था, बस, वैसा ही शरीर के तत्वों अथवा पदार्थों का भी मेल करके समझा दीजिए।

गायत्री और पिण्ड के 24 अंक

सं.म.— तुमने व्यर्थ उतावलापन किया। मैं तुम्हारे प्रश्न का आशय भलीभांति समझ चुका था। तुम शान्ति से सुनते तो अपने आप ही उत्तर मिल जाता। अस्तु, चिन्ता की कोई बात नहीं। अब सुनो, गायत्री ब्रह्माण्ड है, मनुष्य शरीर पिण्ड 'यथा ब्रह्माण्डे तथा पिण्डे' एक प्रसिद्ध वाक्य है। गायत्री में जैसे 24 अक्षर हैं, वैसे ही मनुष्य शरीर में भी सुषुम्णा नाड़ी के सम्बन्ध में 24 कशेरूकायें हैं— ग्रीवा (गर्दन) में 7 पीठ में 12 और कमर में 5।

गायत्री मन्त्र में उदात्त 6, अनुदात्त 5 और लघुमात्रायें तथा अर्धाक्षर 10 हैं। इनका जोड़ 21 होता है। मनुष्य शरीर में भी ग्रीवा से लेकर नीचे के भाग तक 21 ही प्राणसूत्र निकलते हैं। जैसे गायत्री के 24 अक्षर वैसे शरीर के भी 24 अंग हैं। 5 ज्ञानेन्द्रिया, 5 कर्मेन्द्रियां, 5 प्राण, 5 तत्व और 4 अन्तःकरण। इन चौबीसों के समीकरण का नाम ही मनुष्य शरीर है और यह गायत्री है।

ला.— महाराज! अन्तःकरण एक है अथवा चार?

सं.म.— मन, चित्त, बुद्धि, अहंकार यही चारों अंतःकरण कहलाते हैं।

ला.— भगवान! ज्ञानेन्द्रियां और तत्वों के नाम तो मुझे आते हैं। परन्तु 5 प्राण कौन–कौन से हैं और चारों अन्तःकरणों के काम क्या हैं? कृपा करके यह भी बतला दीजिए?

सं.म.— प्राण, अपान, व्यान, उदान और समान यही पाँचों प्राण हैं। (1) चित्त वह है, जिससे चिन्तन होता है। (2) मन वह है जो संकल्प पैदा करता है। (3) बुद्धि वह है जो निश्चय दिलाती है और सत्य और असत्य का विवेचन करती है। (4) अहंकार वह है जो दृढ़ करता है और अहंवृत्ति का प्रकाश करता है।

ग. महाराज! मनुष्य शरीर के जो 24 अंग आपने बतलाये हैं, यदि यही सब गायत्री है तो फिर शेष ही क्या रहा? इसका तो मनुष्य के साथ बड़ा सम्बन्ध बन गया। फिर समस्त संसार के साथ भी मेल होने से, इसी एक के ज्ञान से संसार भर के पदार्थों का भी ज्ञान हो जाता होगा, इस प्रकार पिण्ड के साथ भी इसका मेल

हुआ और ब्रह्माण्ड के साथ भी। फिर तो इस जैसी शक्ति और किस में होगी। कृपा करके अर्थों पर भी प्रकाश डालिये।

गायत्री के अर्थ और व्याख्या

सं.म.– देखो! संसार में तीन पदार्थ अनादि हैं, ब्रह्म, जीव तथा प्रकृति। तीन विद्याएं हैंः कर्म, ज्ञान तथा उपासना। तीन काल हैंः भूत, भविष्यत् तथा वर्तमान। तीन अवस्थाएं हैंः जागृत (उत्पत्ति), स्वप्न (स्थिति) और सुषुप्ति (प्रलय), तीन लोक हैः पृथ्वी, अन्तरिक्ष और द्यौ। तीन ऋण, देव ऋण, पितृ ऋण और ऋषि ऋण। ऐसे ही और अनेक पदार्थ और गुण तीन–तीन ही तुम्हें संसार में मिलेंगे। मेरा इन पदार्थों का वर्णन करने का तात्पर्य यह है कि 'चारो वेदों का सार यही है कि जीवात्मा के लिए प्रकृति का संगी बना रहेगा तो पशु के समान भोग ही भोगता रहेगा। परन्तु यदि वह प्रकृति को अपने से भिन्न समझकर परमात्मा की ओर रूचि करेगा और प्रकृति से भागकर परमात्मा की शरण आवेगा, तो उसके भाग्य में परमात्मा के भोग का आनन्द होगा। वह प्रभु से मिलेगा, कर्म करके, जो निष्काम कर्म हो। परन्तु कर्म तब तक निष्काम नहीं हो सकता जब तक सच्चे प्रभु की उपासना न की जाये। इसके अतिरिक्त और कोई भी मार्ग नहीं, वैसे तो सारा संसार कर्म करता है परन्तु वह कर्म बन्धन पैदा करने वाला है। कारण कि वह ज्ञानसहित नहीं होता। इसलिए प्रकृति को त्यागभाव से भोगने के लिए ज्ञान की आवश्यकता हैं। परमात्मा से युक्त होने के लिए ज्ञान की आवश्यकता है। तीनों कालों में जो एकरस रहने वाला है, वही प्रभु परमात्मा है। जो जीव अपनी तीनों अवस्थाओं में प्रभु की स्मृति रखता है, वह प्रकृति के फन्दे में नहीं फंस सकता। प्रत्येक मनुष्य जब तक अपने तीनों ऋणों से उऋण नहीं होता, पृथ्वी और अन्तरिक्ष लोक में ही चक्कर खाता फिरता रहेगा। इनसे मुक्त हो, वह घौ लोक (ब्रह्मलोक) में पहुँचकर परमात्मा के आनन्द में मग्न हो जायेगा।

ग्रीष्मोत्सव

दिनांक 11 मई से 15 मई 2016

यज्ञ के ब्रह्मा	:	**पूज्य स्वामी डॉ० दिव्यानन्द सरस्वती जी**
उपदेशक	:	**आचार्य आशीष जी, दर्शनाचार्य**
भजनोपदेशक	:	**डॉ० कैलाश कर्मठ, कोलकाता**
मुख्य अतिथि	:	**आचार्य देवव्रत जी, महामहिम श्री राज्यपाल, हिमाचल प्रदेश**

विशेष : दिनांक 15 मई 2016 को समापन समारोह के अवसर पर स्वामी दीक्षानंद स्मृति समारोह धूमधाम से मनाया जायेगा।

सौजन्य से– **THE HERITAGE SCHOOL**
14/6, New Road, Dehradun, India

गाजर का औषधीय प्रयोग

गाजर को उसके प्राकृतिक रूप में ही अर्थात् कच्चा खाने से ज्यादा लाभ होता है। उसके भीतर का पीला भाग नहीं खाना चाहिये, क्योंकि वह अत्यधिक गरम होता है। अतः पित्तदोष, वीर्यदोष एवं छाती में दाह उत्पन्न करता है।

गाजर स्वाद में मधुर, कसैली, कड़वी, तीक्ष्ण, स्त्रिग्ध, उष्णवीर्य, गरम, दस्त को बाँधनेवाली, मूत्रल, हृदय के लिये हितकर, रक्त को शुद्ध बनानेवाली, कफ निकालने वाली, वातदोषनाशक, पुष्टिवर्धक तथा दिमाग एवं नस– नाडियों के लिये बलप्रद है। यह अफारा, बवासीर, पेट के रोगों, सूजन, खाँसी, पथरी, मूत्रदाह, मूत्राल्पता तथा दुर्बलता का नाश करनेवाली है।

गाजर के बीज गरम होते हैं, अतः गर्भवती महिलाओं को उनका उपयोग नहीं करना चाहिये। बीज पचने में भारी होते हैं। कैल्सियम एवं केरोटीन की प्रचुर मात्रा होने के कारण छोटे बच्चों के लिये यह एक उत्तम आहार है। गाजर में आँतों के हानिकारक जन्तुओं को नष्ट करने का अद्भुत गुण है। इसमें विटामिन 'ए' भी काफी मात्रा में पाया जाता है। अतः यह नेत्ररोग में भी लाभदायक है।

गाजर रक्त शुद्ध करनेवाली है। 10–15 दिन केवल गाजर रसपर रहने से रक्तविकार, गाँठ, सूजन एवं पाण्डुरोग– जैसे त्वचा के रोगों में लाभ होता है। इसमें लौहतत्व भी प्रचुरता में पाया जाता है। खूब चबा–चबाकर खाने से दाँत मजबूत, स्वच्छ एवं चमकीले होते हैं तथा मसूड़े मजबूत होते हैं।

विशेष– गाजर के भीतर का पीला भाग खाने से, ज्यादा गाजर खाने के बाद 30 मिनट के अंदर पानी पीने से खाँसी आने लगती है। अत्यधिक गाजर खाने से पेट में दर्द होता है। ऐसे समय में थोड़ा गुड़ खायें। पित्त प्रकृति के लोगों को गाजर का सावधानीपूर्वक उपयोग करना चाहिये।

औषधि प्रयोग

दिमागी कमजोरी– गाजर के रस का नित्य सेवन करने से दिमागी कमजोरी दूर होती है।

दस्त– गाजर का सूप दस्त होने पर लाभदायक होता है।

सूजन– इसके रोगी को सब आहार त्यागकर केवल गाजर का रस अथवा उबली हुई गाजर पर रहने से लाभ होता है।

मासिक न दिखने पर या कष्टार्तव– मासिक कम आने पर या समय से न आने पर गाजर के 5 ग्राम बीजों का 20 ग्राम गुड़ के साथ काढ़ा बनाकर लेने से लाभ होता है।

पुराने घाव– गाजर को उबालकर उसकी पुलटिस बनाकर घाव पर लगाने से लाभ होता है।

खाज– गाजर को कद्दूकस करके अथवा बारीक पीसकर उसमें थोड़ा नमक मिला लें और गरम करके खाजपर रोज बाँधने से लाभ होता है।

आधीसीसी– गाजर के पत्तें पर दोनों ओर शुद्ध घी लगाकर उन्हें गरम करे। फिर उनका रस निकालकर 2–3 बूँदें कान एवं नाक में डाले। इससे आधीसीसी का दर्द मिटता है।

श्वास–हिचकी– गाजर के रस की 4–5 बूँदें दोनो नथुनों में डालने से लाभ होता है।

नेत्ररोग– दृष्टि मन्दता, रतौंधी, पढ़ते समय आँखों में तकलीफ होना आदि रोगों में कच्ची

गाजर या उसके रस का सेवन लाभप्रद है। यह प्रयोग चश्मे का नंबर घटा सकता है।

पाचन सम्बन्धी गड़बड़ी– अरुचि, मन्दाग्नि, अपच आदि रोगों में गाजर के रस में नमक, धनिया, जीरा, काली मिर्च, नींबू का रस डालकर पीये अथवा गाजर का सूप बनाकर पीने से लाभ होता है।

पेशाब की तकलीफ– गाजर का रस पीने से पेशाब आता है। रक्तशर्करा भी कम होती है। गाजर का हलवा खाने से पेशाब में कैल्सियम, फास्फोरस आना बंद हो जाता है।

नकसीर फूटना– ताजे गाजर का रस अथवा उसकी लुगदी सिरपर एवं ललाट पर लगाने से लाभ होता है।

जलने पर– जलने से होने वाले दाह में प्रभावित अंग पर बार बार गाजर का रस लगाने से लाभ होता है।

हृदयरोग– हृदय की कमजोरी अथवा धड़कनें बढ़ जाने पर लाल गाजर को भून ले या उबाल ले। फिर उसे रातभर के लिये खुले आकाश में रख दे, सुबह उसमें मिश्री तथा केवड़े या गुलाब का अर्क मिलाकर रोगी को देने से अथवा 2–3 बार कच्ची गाजर का रस पिलाने से लाभ होता है।

प्रसव पीडा– यदि प्रसव के समय स्त्री को अत्यन्त कष्ट हो रहा हो तो बीजों के काढ़े में एक वर्ष का पुराना गुड़ डालकर गरम–गरम पिलाने से प्रसव जल्दी होता है।

एग्जिमा की अनूभूत रामबाण दवाएं

(1) इस रोग के नाश की नीचे लिखी अनुभूत दवा है–

'करंजवा' के बीजों को दो दिनों तक ठंडे पानी में भिगोकर रखिये, फिर उन्हें छील लीजिए। अंदर से बादाम की तरह की सफेद गुल्ली निकलेगी। उनको बकरी के दूध में खूब महीन सील पर पीस लीजिए और लेई की तरह मलहम बना लीजिए। फिर उसे ताँबे के बर्तन में रख दीजिये। एक बार बनी हुई दवा दो सप्ताह चल सकेगी। सूख जाय तो बकरी का दूध अथवा पानी मिला दीजिये।

सेवन–विधि– नीम के पत्तों को पानी में उबाल लीजिये। उस गरम पानी से घावों को धोइये और साफ कपड़े से पोंछ डालिये, तदन्तर वहाँ मलहम लगा दीजिये। जब सूखकर पपड़ी की तरह उतर जाय तो फिर लगा दीजिये। दिन में तीन–चार बार लगाइये। रात को सोते समय भी लगाकर सोइये। इससे कपड़े खराब नहीं होंगे। आराम तो एक दिन के लगाने से ही मालूम देगा।

किसी भी प्रकार का साबुन या साबुन का पानी नहीं लगाना चाहिये। रबड़ के जूते, हवाई चप्पल नाइलॉन के मोजे व्यवहार में नहीं लाने चाहिये। खटाई, मिर्च, गरम मसाला का सेवन न करें। नमक का सेवन कम करें। 'नीम' की कच्ची पत्ती घी या नारियल के तेल में तलकर थोड़ी मात्रा में सप्ताह में एक–दो बार सेवन करने से खून में रह रहे रोग के कीटाणु नष्ट हो जाते हैं।

–तिलकचन्द कन्दोई

एग्जिमा रोग की दूसरी अनुभूत दवा

(2) दवा बनाने की विधि और वस्तुएँ

रस कपूर चार आना भर
सफेद खैर एक भर
मुर्दाशंख एक भर
छोटी इलायची के दाने एक भर

माजूफल पाँच दाने
चित्ती कसैली या सुपारी पाँच दाने
कइयाँ या करंज पाँच दाने
कुचिला पाँच दाने
सोरही कोड़ी पाँच दाने

दूसरे समूह की पाँचों चीजों को एक छोटे मिट्टी के पात्र में रखकर उसका मुँह मिट्टी के ही ढक्कन से बंद कर दें और आटे से उसे साट दें। तदन्तर गोइठों (उपलों)– की भट्ठी बनाकर उसमें रख दें। भीतर की दवा जलकर राख हो जाएगी, तब उसे निकालकर खरल करके पाउडर बना लें।

पहले समूह की चारों चीजों को अलग से कूट तथा खरल करके उनका भी पाउडर बना लें। फिर दोंनों समूह की दवाओं को कपड़छान करके एक में मिला दें एवं उसे चमेली के शुद्ध तेल में मिलाकर मलहम बना लें। बस, दवा तैयार हो गयी।

सेवन विधि– घाव को जलसे या कपड़े से पहले साफ कर लें, उसके बाद प्रतिदिन उसपर दवा का लेप करते जायँ। ध्यान रहे कि घाव पर पानी नहीं पड़ना चाहिये। ईश्वर कृपा से दो–चार दिनों में ही लाभ मालूम होगा।

–अखिलेशश्वरप्रसाद सिन्हा, जगदीशपुर (शाहाबाद), बिहार

एग्जिमा रोग की तीसरी अनुभूत दवा

(3) सुहागा, आँवासार, गन्धक, फिटकरी और शक्कर आवश्यकतानुसार बराबर वजन में लेकर अलग–अलग बारीक पीसकर रख लीजिये। प्रयोग करने के समय नींबू के रस में मिलाकर पीड़ित स्थान को साफ करके लगाइये। साथ में मञ्जिष्ठादि काढ़ा भी सेवन कीजिये। शत–प्रतिशत रोगियों को लाभ हुआ है। महात्माप्रदत्त अनुभूत योग है। इससे लाभ उठाइये।

–श्रीकृष्णदास नेमा राजगढ़ (व्यावरा)

सादर अनुरोध

तपोवन आश्रम के सदस्य बनें और आश्रम द्वारा किये जा रहे जनोपयोगी कार्यों में सहयोग प्रदान करें।

साधारण सदस्य रु 1200/– प्रति वर्ष	सम्मानित सदस्य रु. 25000/– प्रति वर्ष
सहायक सदस्य रु. 6000/– प्रति वर्ष	विशिष्ट सम्मानित सदस्य रु. 50000/– प्रति वर्ष
विशिष्ट सदस्य रु. 12000/– प्रति वर्ष	

तपोवन आश्रम का मेन गेट रात्रि 9 बजे बंद कर दिया जाता है यदि आप रात्रि 9 बजे के बाद आश्रम में निवास हेतु आ रहे हैं तो कृपया आश्रम के कर्मचारी श्री प्रकाश–8954361107 अथवा श्री जगमोहन–7830798919 पर पूर्व में ही सूचित कर दें ताकि आपके आवास एवं भोजन की उचित व्यवस्था की जा सके।

अधिक जानकारी के लिए आश्रम के सचिव से दूरभाष नं० 9412051586 पर वार्ता करें।

सौजन्य से–
KUKREJA INSTITUTE OF HOTEL MANAGEMENT
DEHRADUN

वैदिक साधन आश्रम, तपोवन

रायपुर रोड (नालापानी), देहरादून–248008, दूरभाष : 0135–2787001

आत्मकल्याण का स्वर्णिम अवसर

चतुर्वेद ब्रह्म पारायण महायज्ञ, योग–साधना का विशेष आयोजन

तदनुसारेण 1 मार्च से 21 मार्च 2016 तक

यज्ञ के प्रेरणास्रोत–स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती जी

यज्ञ के ब्रह्मा– आचार्य विद्यादेव जी

आत्मकल्याण के जिज्ञासुओं के लिए प्रभुकृपा से तपोवन आश्रम के ऊपरी प्रभाग–पहाड़ी पर यह सुन्दर आयोजन किया जा रहा है। सच्चे योग्य तथा समर्थ जिज्ञासु जन पूर्ण उत्साह के साथ श्रद्धा–आस्था समन्वित हुए भाग लेवें। यह आयोजन याज्ञिकों के लिये सर्वथा निःशुल्क होगा। श्रद्धापूर्वक दिया गया सहयोग ही स्वीकार किया जाएगा।

आयोजन में भाग लेने वाले जिज्ञासुओं के लिये अनिवार्य नियम अधोलिखित है–

दिनांक 29 फरवरी 2016 के सायंकाल तक पहुंचना आवश्यक होगा। 1 मार्च 2016 के प्रातः काल के पश्चात् प्रवेश सम्भव नहीं होगा। आयोजन में विधिवत् प्रवेश के पश्चात् मध्य में छोड़कर जाना सम्भव नहीं होगा। अधोलिखित सभी कार्यक्रमों में भाग लेना अपरिहार्य होगा, अर्थात सामर्थ्यवान प्रतिभागी ही प्रवेश पा सकेंगे। पूर्णकालिक निवास आश्रम परिसर में ही रहेगा, आयोजन काल में बाहर जाने की छूट नित्यान्त नहीं होगी। आश्रम से बाहर किसी प्रकार का सम्पर्क चलदूरभाष तक से भी करने की अनुमति नहीं होगी। 21 दिन तक सभी प्रकार के बाह्य सम्पर्क बन्द रहेंगे। प्रातः 4 बजे तक उठने, प्राणायाम, आसनादि में बैठने का अभ्यास अभी से अपने घर पर करते रहें ताकि यहां आकर बैठने में कष्ट की अनुभूति न हो। सभी नियमों का विधिवत पालन करते हुए अनुशासित रहना होगा।

विशेष– अपना बिस्तर, थाली, कटोरी, गिलास, चम्मच चाकू, टार्च, कापी, पेन आदि साथ। यथा सम्भव चारों वेद भाष्य भी लावें। आप इष्ट मित्रों सहित सादर आमंत्रित हैं।

कार्यक्रम सारिणी

प्रातः जागरण	3–4 के मध्य
योग साधना, आसन प्राणायाम, ध्यानादि	4 से 7 बजे प्रातः
यज्ञ प्रातः काल	7:30 से 9:30
प्रातः प्रातराश	9.30 से 10.00
सेवायोग	10.00 से 11.00 पूर्वाह्न
भोजन–विश्राम	11 बजे से 1 बजे अपराह्न
वेद का पठन–पाठन	1.00 बजे से 3.00 बजे
यज्ञ–सायंकाल	3.30 से 5.30 सायं
साधना	6.00 से 8.00 बजे रात्रि
भोजन रात्रि	9.00 बजे तक
रात्रि– शयन	1.00 से 3.00 बजे

दिनांक 19, 20 एवं 21 मार्च को गायत्री यज्ञ भी होगा जिसमें बाह्य व्यक्ति भी भाग ले सकेंगे।

निवेदक

दर्शन कुमार अग्निहोत्री
अध्यक्ष–09710033799

ई. प्रेम प्रकाश शर्मा
सचिव–09412051586

संतोष रहेजा
उपाध्यक्षा–09910720157

वैदिक योग प्रशिक्षण शिविर (प्रथम स्तर)

(6 मार्च से 13 मार्च 2016)

वैदिक साधन आश्रम तपोवन, नालापानी, देहरादून

यदि आप सत्य, सनातन वैदिक सिद्धान्त को आत्मसात् कर वैदिक साधना पद्धति के शुद्ध स्वरूप को प्रायोगिक स्तर पर समझकर स्वयं तथा ईश्वर की यथार्थ, निर्भ्रान्त अनुभूतियों को स्पर्श करना चाहते हों तो आपका वैदिक साधन आश्रम तपोवन, नालापानी देहरादून में 6 मार्च सायंकाल से प्रारम्भ होकर प्रातः 13 मार्च को समाप्त होने वाले वैदिक योग प्रशिक्षण शिविर प्रथम स्तर में भाग लेना सार्थक हो सकता है।

यह शिविर आचार्य आशीष जी दर्शनाचार्य के मार्गदर्शन में होगा। इस शिविर में वैदिक योग का क्रियात्मक प्रशिक्षण तथा योग्यता व पात्रतानुसार शंका समाधानपूर्वक साधना हेतु मार्गदर्शन दिया जायेगा। समस्त दैनिक व्यवहार में मन को चिन्ता, तनाव से रहित कर शान्त व समता में बनाये रखना किस प्रकार से सम्भव हो सकता है, इसका प्रशिक्षण भी इसके अन्तर्गत होगा।

1. यह शिविर आवासीय है। शिविर में महिलाओं व पुरुषों की निवास व्यवस्था पृथक-पृथक होती है।
2. सम्पूर्ण शिविर में विधिवत् भाग लेने के इच्छुक सज्जन ही आवेदन हेतु सम्पर्क करें। शिविर समापन से पूर्व वापिस जाना सम्भव नहीं हो सकेगा तथा 6 मार्च सायंकाल 5:00 बजे के बाद प्रवेश नहीं दिया जायेगा। इस कष्ट हेतु हम पूर्व से ही क्षमा प्रार्थी हैं।
3. प्रथम स्तर के शिविरों में भाग लेने वाले साधक ही आगे गम्भीर साधना के शिविरों में भाग ले सकेंगे।
4. शिविर में अधिकाधिक 70 साधक साधिकाओं की ही व्यवस्था सम्भव है। अतः इच्छुक जन पूर्व से ही अपना स्थान सुरक्षित करा लें। पुराने शिविरार्थी नवीन जिज्ञासुओं को अवसर व प्रोत्साहन देकर सहयोग प्रदान कर सकते हैं।
5. स्थान आरक्षण व अन्य जानकारी हेतु इन महानुभावों से सम्पर्क करें:-1. श्री नन्द किशोर अरोड़ा जी, दिल्ली, (मो. नं. - 09310444170) समयः दिन में 10:30 बजे से सायं 4:00 बजे तक, एवं रात्री 8 बजे से 10 बजे तक, 2. श्री यश वर्मा जी, यमुनानगर, मो. 09416446305 समयः प्रातः 10.00 से सायं 5.00 बजे तक 3. श्री विजेश गर्ग जी मो. 09410315022 समयः 10:00 बजे से सायं 4:00 बजे।
6. अपनी वापसी का आरक्षण पूर्व ही करा कर आयें। शिविर के मध्य अग्रिम यात्रा, हेतु आरक्षण करवाने की सुविधा हमारे पास नहीं है।
7. शिविर में भाग लेने की न्यूनतम आयु सीमा 17 वर्ष है। अपने साथ संचिका, पेन, टार्च व फल काटने हेतु चाकू अवश्य लायें। अपने साथ अपना आई.डी. प्रूफ एवं फोटो अवश्य लायें।
8. शुल्क-इस ईश्वरीय कार्य में शिविर हेतु श्रद्धा व भावनापूर्वक स्वैच्छिक सहयोग करना सभी प्रतिभागियों के लिये अनिवार्य है।
9. आवश्यकता होने पर **आचार्य आशीष जी** (मो.नं. 09410506701 से रात्रि 8:00 बजे से 9.00 बजे के मध्य सम्पर्क कर सकते है।

निवदेक

दर्शन कुमार अग्निहोत्री	**ई. प्रेम प्रकाश शर्मा**	**संतोष रहेजा**
अध्यक्ष	सचिव	उपाध्यक्षा
09710033799	09412051586	09910720157

De Bono

Saturn Series

CPU Holder

Slide out Keyboard tray

Swivel and Tiltable keyboard tray

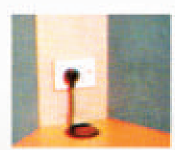

Wire Management

All dimensions are subject to change without any prior notice because of continuous research & development. All designs shown here are proprietary: Any infringement is liable for prosecution.

DE BONO FLEXCOM (INDIA) LTD.: Kukreja House, 1st Floor, 46, Rani Jhansi Road, New Delhi-110055

Ph : 011-23540721, 23533936 **Fax :** 23533944 **Email :** debono@debonoindia.com

ISO 9001 DNV CERTIFIED

डाक पंजीयन UA/DO/DDN/75/2015-17 समाचार पत्र पंजीयन 51900/88

MUNJAL SHOWA मुंजाल शोवा

मुंजाल शोवा लिमिटेड देश में टू व्हीलर / फोर व्हीलर उद्योग में सभी प्रमुख ओ.ई.एम. के लिए शॉक एब्जोर्बर, फ्रंट फोर्क्स, स्ट्रट्स (गैस चार्जड और कंवेंशनल) और गैस स्प्रिंगो का सबसे बड़ा निर्माता है। निर्मित उत्पाद, गुणवत्ता और सुरक्षा के कड़े मानों के अनुरूप होते हैं। कम्पनी के उत्पाद बाधामुक्त, आरामदेह, चिरस्थायी, विश्वसनीय और सुरक्षित यात्रा के लिए जाने जाते हैं। मुंजाल शोवा लिमिटेड, टीएस–16949, आईएसओ 14001, ओ.एच.एस.ए.एस. 18001 और टीपीएम प्रमाणित कम्पनी है। मुंजाल शोवा लिमिटेड का शोवा कार्पोरेशन जापान के साथ तकनीकी और वित्तीय सहयोग करार है।

टीपीएम प्रमाणित कम्पनी

आईएसओ / टीएस–16949–2002 प्रमाणित

आईएसओ–14001 एवं ओएचएसएएस–18001 प्रमाणित

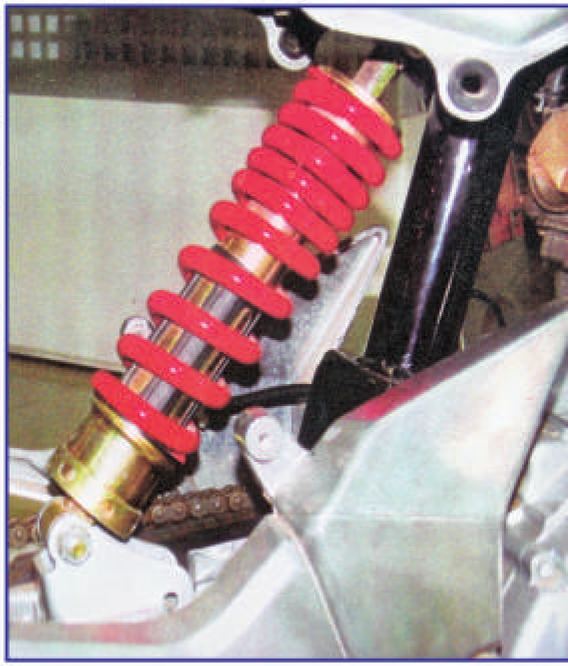

हमारे ख्यातिप्राप्त ग्राहक

- हीरो मोटोकोर्प लिमिटेड
- मारुती सुजुकी इन्डिया लिमिटेड
- होन्डा कार्स इन्डिया लिमिटेड
- होन्डा मोटर साइकल एवं स्कूटर इन्डिया (प्र0) लिमिटेड
- इन्डिया यामहा मोटर (प्र0) लिमिटेड

हमारा उत्पादन

- स्ट्रट्स / गैस स्ट्रट्स
- शॉक एब्जॉर्बर्स
- फ्रन्ट फोर्कस
- गैस स्प्रिंगस / विन्डो बैलेन्सर्स

मुंजाल शोवा लिमिटेड

प्लॉट नं0 9–11, मारुति इन्डस्ट्रीअल एरिया, गुड़गाँव। दूरभाषः 0124–2341001, 4783000, 4783100
प्लॉट नं0 26 इ एवं एफ, सेक्टर–3, मानेसर, गुड़गाँव। दूरभाषः 0124–4783000, 4783100
प्लॉट नं0 1, इन्डस्ट्रीअल पार्क–2, सालेमपुर गाँव, मेहदूद–हरिद्वार, उत्तराखण्ड दूरभाषः 0124–4783000, 4783100

वैदिक साधन आश्रम सोसाइटी के लिए प्रकाशक मुद्रक प्रेम प्रकाश द्वारा सरस्वती प्रेस, 2, ग्रीन पार्क, निरंजनपुर, देहरादून–248001 (उत्तराखण्ड) से मुद्रित एवं वैदिक साधन आश्रम सोसाइटी (रजि.), नालापानी, देहरादून (उत्तराखण्ड) से प्रकाशित। संपादक– कृष्णकान्त वैदिक शास्त्री

सरस्वती प्रेस, देहरादून, ई-मेल : akhilg333@gmail.com